राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

स्वतंत्र प्रभात

स्वतंत्र प्रभात दैनिक अख़बार तथा ऑनलाइन चैनल से सीधा जुड़ने के लिए संपर्क करें........
9511151254

@swatantraprabhatmedia | @swatantramedia | RNI.No. UHIN/2012/43078 (epaper.swatantraprabhat.com) | @SwatantraPrabhatonline | news@swatantraprabhat.com

सीतापुर से प्रकाशित एंव अयोध्या ,प्रयागराज ,मिर्जापर ,गोरखपुर , बरेली ,बुंदेलखंड , उत्तराखंड , देहरादून

सीतापुर, शनिवार, 13 दिसंबर 2025
वर्ष 14, अंक 240, पृष्ट 04, मूल्यः 01 रुपया
www.swatantraprabhat.com

गाज़ियाबाद , दिल्ली , हरियाणा , चंडीगढ़ , झारखण्ड , बिहार , मध्य प्रदेश ,असम, तेलंगाना आदि जनपदो में प्रसारित

15 फीट गहरी खाई में मिला शव इलाक़े में मचा हड़कंप आधार कार्ड से शिनाख्ती का प्रयास ..03

तेज रफ्तार कारें आमने-सामने भिड़ीं, चार घायल, तीन कानपुर रिफर ..04

COVID में 1596 डॉक्टरों ने गंवाई जान, मुआवजा सिर्फ 475 को, सुप्रीम कोर्ट के फैसले के क्या हैं मायने

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

कोविड-19 महामारी, भारत की सबसे बड़ी स्वास्थ्य आपदाओं में से एक रही है. ये वही समय था जब देश के हर शख्स की नजरें स्वास्थ्य सेवाओं पर टिक गई थीं. अस्पतालों में बेड की कमी, ऑक्सीजन संकट और संक्रमित मरीजों की बाढ़ के बीच सबसे आगे जो लोग खड़े थे, वे थे डॉक्टर, नर्स, पैरामेडिकल स्टाफ और अन्य स्वास्थ्यकर्मी. इस लड़ाई में हजारों स्वास्थ्यकर्मियों ने अपनी जान जोखिम में डाली और कई ने अपनी जान तक गंवा दी. लेकिन महामारी के बीत जाने के बाद एक बड़ा सवाल उभर कर सामने आया, क्या जिन डॉक्टरों ने अपनी जान दी, उनके परिवारों को वास्तव में वह सम्मान और सुरक्षा मिली, जिसका वादा किया गया था? सुप्रीम कोर्ट ने इसी मामले पर गुरुवार को ऐतिहासिक फैसला देते हुए कहा कि कोविड-19 महामारी के दौरान ड्यूटी करते हुए जान गंवाने वाले सभी डॉक्टरों के परिवार को 'प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना' के तहत 50 लाख रुपये का बीमा देना होगा. पीठ ने कहा कि महामारी के समय डॉक्टरों की सेवाएं शासन की ओर से औपचारिक रूप से मांगी गई थीं, इसलिए इस अहम मुद्दे पर सरकारी और निजी डॉक्टरों में फर्क नहीं समझा जाना चाहिए।

प्रधानमंत्री गरीब कल्याण पैकेज और बीमा योजना की घोषणा

मार्च 2020 में केंद्र सरकार ने प्रधानमंत्री गरीब कल्याण पैकेज (PMGKP) के तहत स्वास्थ्यकर्मियों के लिए 50 लाख रुपये के बीमा कवर की घोषणा की थी. इसका उद्देश्य स्पष्ट था, जो डॉक्टर और स्वास्थ्यकर्मी कोविड-19 के इलाज के दौरान संक्रमण का शिकार होकर जान गंवाते हैं, उनके परिवारों को आर्थिक सुरक्षा दी जाए. यह योजना केवल सरकारी अस्पतालों तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसमें समुदाय स्तर पर काम करने वाले स्वास्थ्यकर्मी और निजी क्षेत्र के हेल्थ प्रोफेशनल्स को भी शामिल किए जाने की बात कही गई थी. उस समय सरकार की ओर से यह संदेश दिया गया कि चाहे डॉक्टर सरकारी हों या निजी, अगर वे महामारी के दौरान सेवा में हैं, तो देश उनके साथ खड़ा है.

प्राइवेट डॉक्टरों को लेकर भ्रम और प्रशासनिक अड़चनें

योजना की घोषणा के बाद भी जमीनी स्तर पर कई तरह की अस्पष्टताएं सामने आईं. सबसे बड़ा सवाल यही था कि क्या निजी अस्पतालों और निजी क्लीनिकों में काम करने वाले डॉक्टर इस बीमा के दायरे में आएंगे या नहीं. कई मामलों में बीमा कंपनियों और प्रशासन ने यह तर्क दिया कि यदि डॉक्टर किसी सरकारी आदेश के तहत या किसी अधिसूचित कोविड अस्पताल में ड्यूटी पर नहीं थे, तो उन्हें योजना का लाभ नहीं दिया जा सकता. इसी भ्रम के चलते सैकड़ों परिवार वर्षों तक मुआवजे के लिए भटकते रहे।

बॉम्बे हाईकोर्ट का 2021 का फैसला

मार्च 2021 में बॉम्बे हाईकोर्ट ने एक महत्वपूर्ण फैसला सुनाया, जिसने इस भ्रम को और गहरा कर दिया. अदालत ने कहा कि निजी अस्पतालों के डॉक्टर तब तक प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना के तहत बीमा के हकदार नहीं हैं, जब तक उनकी सेवाएं राज्य या केंद्र सरकार द्वारा औपचारिक रूप से नहीं ली गई हों. यह फैसला किरण भास्कर सुरगड़े नामक महिला की याचिका पर आया था. उनके पति ठाणे में निजी क्लिनिक चलाते थे और कोविड-19 से संक्रमित होकर 2020 में उनकी मृत्यु हो गई थी. जब परिवार ने बीमा का दावा किया, तो इंश्योरेंस कंपनी ने यह कहकर आवेदन खारिज कर दिया कि वह क्लिनिक कोविड अस्पताल के रूप में अधिसूचित नहीं था. बॉम्बे हाईकोर्ट के इस निर्णय ने हजारों निजी डॉक्टरों के परिवारों की उम्मीदों पर पानी फेर दिया।

सुप्रीम कोर्ट का 11 दिसंबर का ऐतिहासिक फैसला

11 दिसंबर को सुप्रीम कोर्ट ने इस पूरे मामले में ऐतिहासिक टिप्पणी करते हुए बॉम्बे हाईकोर्ट के फैसले को पलट दिया. न्यायमूर्ति पीएस नरसिम्हा और न्यायमूर्ति आर महादेवन की पीठ ने साफ कहा कि कोविड-19 के दौरान ड्यूटी पर मौजूद जिन निजी डॉक्टरों की मौत हुई, उनके परिवार प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना के तहत 50 लाख रुपये के बीमा के हकदार हैं. सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि महामारी के दौरान लागू किए गए कानून और नियम इसलिए थे ताकि डॉक्टरों की सेवाएं बिना किसी बाधा के ली जा सकें. बीमा योजना का उद्देश्य भी यही था कि फ्रंटलाइन पर काम कर रहे डॉक्टरों और स्वास्थ्यकर्मियों को यह भरोसा दिया जाए कि देश उनके साथ खड़ा है।

बीमा दावों पर साक्ष्य आधारित निर्णय की बात

हालांकि सुप्रीम कोर्ट ने यह भी स्पष्ट किया कि प्रत्येक बीमा दावा कानून और साक्ष्यों के आधार पर तय किया जाएगा. दावेदार को यह साबित करना होगा कि डॉक्टर की मृत्यु कोविड-19 ड्यूटी के दौरान हुई थी. इसका उद्देश्य फर्जी दावों को रोकना है, लेकिन साथ ही यह भी सुनिश्चित करना है कि वास्तविक हकदारों को न्याय मिले.

RTI से सामने आई चौंकाने वाली सच्चाई

इस पूरे मुद्दे के बीच सूचना के अधिकार (RTI) के जरिए सामने आए आंकड़े और भी चिंताजनक तस्वीर पेश करते हैं. कन्नूर के नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. के वी बाबू द्वारा दायर एक आरटीआई के अनुसार, अक्टूबर 2023 तक केवल 475 डॉक्टरों के परिवारों को ही मुआवजा दिया गया था. जबकि इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (IMA) के अनुसार, पहली और दूसरी लहर में कुल 1,596 डॉक्टरों की मौत हुई. इस हिसाब से देखा जाए तो केवल 21 प्रतिशत डॉक्टरों के परिवारों को ही बीमा राशि मिल पाई।

कुल मुआवजे में डॉक्टरों का कितना हिस्सा

आरटीआई के जवाब के अनुसार, अब तक 2,244 स्वास्थ्यकर्मियों के परिवारों को कुल 1,122 करोड़ रुपये का मुआवजा दिया गया है. इसमें से 237.5 करोड़ रुपये 475 डॉक्टरों के परिवारों को मिले, जबकि 1,769 अन्य स्वास्थ्यकर्मियों के परिवारों को 884.5 करोड़ रुपये दिए गए. इसका अर्थ यह है कि कुल मुआवजे में डॉक्टरों का हिस्सा मात्र 21 प्रतिशत के आसपास है, जबकि महामारी के दौरान डॉक्टर सबसे अधिक जोखिम में थे।

पहली और दूसरी लहर का असर हर राज्य पर

सरकार ने संसद में यह कहकर पल्ला झाड़ लिया कि कोविड-19 से मौतों का पेशेवार आंकड़ा केंद्र स्तर पर उपलब्ध नहीं है. ऐसे में इंडियन मेडिकल एसोसिएशन ने स्वयं राज्यवार आंकड़े जुटाए. पहली लहर में तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक जैसे राज्यों में डॉक्टरों की बड़ी संख्या में मौतें हुईं जबकि दूसरी लहर में दिल्ली, बिहार, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल सबसे ज्यादा प्रभावित रहे. इन आंकड़ों से स्पष्ट है कि डॉक्टरों की मौत किसी एक राज्य या क्षेत्र तक सीमित नहीं थी, बल्कि पूरे देश में फैली हुई थी।

कोविड में मजबूरी में खोलने पड़े क्लीनिक

डॉ. बाबू का कहना है कि कई डॉक्टर ऐसे थे, जिन्हें मजबूरी में अपने क्लीनिक खोलने पड़े. कई राज्यों में एपिडेमिक एक्ट के तहत यह अनिवार्य कर दिया गया था कि मेडिकल प्रतिष्ठान बंद नहीं होंगे. ऐसे में यह कहना कि निजी डॉक्टर 'सरकारी ड्यूटी' पर नहीं थे, न केवल तकनीकी बहाना है बल्कि नैतिक रूप से भी गलत है।

संक्षिप्त ख़बरें

अल्ट्रासाउंड कराने के नाम पर न्यूड कराया, फिर की छेड़छाड़- महिला का अस्पताल कर्मी पर गंभीर आरोप

गोरखपुर- उत्तर प्रदेश गोरखपुर जिले के जिला महिला अस्पताल से मानवता को शर्मसार कर देने वाली घटना सामने आई है। गुरुवार को अल्ट्रासाउंड कराने पहुंची एक महिला ने अस्पताल कर्मी पर कपड़े उतरवाकर छेड़खानी करने का गंभीर आरोप लगाया है। महिला का आरोप है कि जांच के नाम पर उसे पूरी तरह निर्वस्त्र कराया गया और फिर अश्लील हरकत की गई। विरोध करने पर कर्मचारी ने उसका मुंह दबाकर जान से मारने की धमकी दी।

पीड़िता ने आरोपी के खिलाफ दर्ज कराया केस

पीड़िता ने शुक्रवार को कोतवाली थाने में शिकायत दर्ज कराई, जिसके बाद आरोपी कर्मी के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी गई है। मामले की गंभीरता को देखते हुए अस्पताल प्रशासन ने तीन सदस्यीय जांच कमेटी गठित कर दी है।

पूरी घटना कैसे हुई?

गुलरिहा थाना क्षेत्र की पीड़िता ने बताया कि वह 11 दिसंबर की सुबह जिला महिला अस्पताल पहुंची थी, जहां डॉक्टर ने पेट का अल्ट्रासाउंड कराने का निर्देश दिया। महिला जांच के लिए निर्धारित कमरे में पहुंची, जहां कर्मचारी अभिमन्यु गुप्ता मौजूद था। कुछ देर बाद महिला का नंबर आया और वह अंदर गई।

'बिना कपड़े उतारे अल्ट्रासाउंड नहीं होगा '- महिला का आरोप

महिला ने अपनी तहरीर में बताया कि आरोपी ने जांच के नाम पर उससे कपड़े उतरवाने की बात कही। महिला के निर्वस्त्र होते ही उसने उसके साथ छेड़छाड़ शुरू कर दी। जब महिला ने शोर मचाया तो आरोपी ने उसका मुंह दबाकर धमकी दी कि यदि उसने आवाज उठाई तो उसे जान से मार देगा। डरी-सहमी महिला को आरोपी ने कमरे से भगा दिया, जिसके बाद वह सीधे कोतवाली थाने पहुंची और शिकायत दर्ज कराई।

अस्पताल प्रशासन हरकत में, जांच कमेटी गठित

घटना की जानकारी मिलते ही जिला महिला अस्पताल के SIC जय कुमार ने तीन सदस्यीय जांच समिति बनाई है। उन्होंने कहा कि आरोप बेहद गंभीर हैं, जांच में सच्चाई सामने आने पर कठोर कार्रवाई की जाएगी। कोतवाल छत्रपाल सिंह ने बताया कि आरोपी के खिलाफ स्नद्धक्र दर्ज कर ली गई है और घटना के सभी बिंदुओं पर जांच की जा रही है।

महाराष्ट्र में इस साल नौ महीनों में 781 किसानों ने आत्महत्या की: मंत्री

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

नई दिल्ली- महाराष्ट्र में 2025 के पहले नौ महीनों में कर्ज, फसल खराब होने और बहुत ज़्यादा बारिश की वजह से 781 किसानों ने आत्महत्या की है. यह जानकारी राज्य के राहत और पुनर्वास विभाग के मंत्री मकरंद जाधव (पाटिल) ने गुरुवार को विधान परिषद में एक लिखित जवाब में दी. विदर्भ के नागपुर डिवीज़न में 296 किसानों ने आत्महत्या की है और मराठवाड़ा में 212 किसानों ने आत्महत्या की है. जाधव ने बताया कि राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के 2023 के आंकड़ों के अनुसार, देश में हुए हर दो किसान आत्महत्याओं में से एक महाराष्ट्र में हुई. महाराष्ट्र में अब तक दर्ज 6,669 किसान आत्महत्याओं में से 4,150 किसान और 2,519 कृषि मज़दूर थे. वह विधानपरिषद सदस्यों सुधाकर अडबाले, अशोक जगताप, अभिजीत वंजारी, राजेश राठोड़, धीरज लिंगाडे तथा अन्य सदस्यों द्वारा राज्य में बढ़ती आत्महत्याओं के संबंध में पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दे रहे थे। उन्होंने कहा, 'आत्महत्याओं को रोकने के लिए किसानों की उपज के उचित दाम सुनिश्चित करना, सिंचाई सुविधाओं में वृद्धि करना, फसल/कृषि भूमि/पशुधन हानि के लिए किसानों को तुरंत मुआवजा वितरित करना, और आपदा राहत केंद्रों का संचालन जैसे उपाय जिला स्तर पर लागू किए जा रहे हैं.' जुलाई में जाधव ने विधानसभा को बताया था कि मार्च महीने में अकेले मराठवाड़ा और विदर्भ में 250 किसान आत्महत्याएं दर्ज की गईं. उन्होंने बताया, इनमें से 102 मामलों को सरकारी मुआवजे के लिए पात्र पाया गया, 62 मामले अपात्र पाए गए और 86 मामले जांच के लिए लंबित हैं. 102 पात्र मामलों में से 77 परिवारों को 1 लाख रुपये की वित्तीय सहायता दी गई। जाधव ने आगे बताया कि अप्रैल में 229 किसान आत्महत्याएं दर्ज की गईं, जिनमें से 74 मामले पात्र पाए गए, जबकि 31 को मुआवजा नहीं मिला. शेष मामलों में सहायता प्रदान करने की प्रक्रिया जारी है. वहीं, नई दिल्ली में एनसीपी (एसपी) की सांसद फ़ौज़िया ख़ान ने राज्यसभा में कहा कि महाराष्ट्र में पिछले तीन महीनों में 766 किसानों ने आत्महत्या की है. उन्होंने शून्यकाल के दौरान यह मुद्दा उठाते हुए पूछा, 'मेरा सरकार से सवाल है - किसान कब सरकार के लिए प्रिय बनेंगे?' ख़ान ने कहा कि महाराष्ट्र किसान आत्महत्याओं में देश में सबसे ऊपर है, और राज्य सरकार ने विधानसभा में तीन महीनों में 766 मौतों की जानकारी दी है. उन्होंने कहा, 'इनमें से 676 परिवारों को सरकारी सहायता मिली, जबकि 200 को सहायता नहीं दी गई.' ख़ान ने कहा कि इस वर्ष भारी बारिश और व्यापक बाढ़ के बाद 31,628 करोड़ रुपये के राहत पैकेज की घोषणा के बावजूद ज़मीनी हकीकत अलग है. उन्होंने यह भी इंगित किया कि केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने लोकसभा में बताया था कि मंत्रालय को महाराष्ट्र से किसी अतिरिक्त सहायता का प्रस्ताव प्राप्त नहीं हुआ. वहीं, ख़ान ने चौहान के जवाब का हवाला देते हुए कहा कि राज्य आपदा प्रतिक्रिया कोष (एसडीआरएफ) के तहत किसानों के लिए 4,176 करोड़ रुपये आवंटित किए गए, जिसमें केंद्र का हिस्सा 3,180 करोड़ रुपये था, और 1,13,455 किसानों के बैंक खातों में 82 करोड़ रुपये जमा किए गए।

उन्होंने कहा, 'बेचारा किसान इन आंकड़ों से स्तब्ध है.'

एनसीपी-एससीपी सांसद ने आंकड़ों में विसंगति की ओर भी ध्यान दिलाया. उन्होंने कहा कि जहां राज्य के कृषि मंत्री दत्तात्रेय भरने ने बताया कि 19 जिलों में 14.36 लाख हेक्टेयर क्षेत्र बाढ़ से प्रभावित हुआ, वहीं केंद्र को भेजी गई रिपोर्ट में केवल 1,10,309 हेक्टेयर का उल्लेख है. ख़ान ने कहा, 'कहां 14 लाख और कहां 1 लाख? यह किसानों के साथ नाइंसाफ़ी और मज़ाक है.' उन्होंने जोर दिया कि यह कोई साधारण मौसमी संकट नहीं बल्कि लाखों किसानों को प्रभावित करने वाली एक व्यापक कृषि आपदा है, और कहा कि मौजूदा फ़सल बीमा ढांचा पर्याप्त कवरेज प्रदान नहीं करता।

UP में इतनी महिला पुलिसकर्मी एक साथ सस्पेंड, दारोगा की लगी क्लास, SSP ऑफिस का अकाउंटेंट भी निलंबित; चौंका देगी वजह , विभाग में मचा हड़कंप

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

झांसी- यूपी के झांसी में आईजी आकाश कुलहरि ने पुलिसकर्मियों की लापरवाही पर बड़ी कार्रवाई करते हुए सख्त संदेश दिया है। मऊरानीपुर थाने और एसएसपी कार्यालय के निरीक्षण के दौरान संतोषजनक जवाब न मिलने और फॉलोअप में भारी गड़बड़ियां सामने आने पर आईजी ने कई कर्मचारियों को तुरंत निलंबित कर दिया।

मिशन शक्ति केंद्र की प्रभारी और दो महिला सिपाही सस्पेंड

निरीक्षण के दौरान जब आईजी मिशन शक्ति केंद्र पहुंचे और वहां मौजूद प्रभारी व महिला सिपाहियों से जानकारी मांगी, तो वे कोई भी ठोस या संतोषजनक जवाब देने में नाकाम रहीं। इससे नाराज आईजी ने फटकार लगाते हुए कहा, 'यहां कोई मजाक नहीं चल रहा है, थाने में बैठकर टाइम पास न करें।' इसके बाद उन्होंने तीनों कर्मचारियों को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया। इस कार्रवाई के बाद पुलिस विभाग में हड़कंप मचा हुआ है।

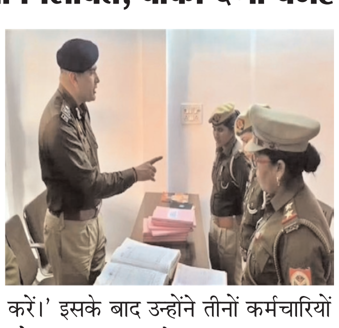

SSP कार्यालय में मिलीं गंभीर गड़बड़ियां, एकाउंटेंट निलंबित

आईजी आकाश कुलहरि ने झांसी एसएसपी ऑफिस का भी निरीक्षण किया। यहां उन्होंने एकाउंटेंट द्वारा कई वित्तीय अनियमितताएं, खासकर टीए-डीए में गड़बड़ियां पाई। मामले को गंभीर मानते हुए उन्होंने एकाउंटेंट को निलंबित कर दिया, जबकि हेड क्लर्क को कड़ी चेतावनी दी गई।

थानेदार की फोन पर लगाई क्लास

निरीक्षण के दौरान ककरबई थाना क्षेत्र का एक फरियादी करीब 100 किलोमीटर दूर से शिकायत लेकर एसएसपी ऑफिस पहुंचा। उसकी मजबूरी जानकर आईजी ने वहीं से थानेदार को फोन लगाया और जमकर फटकार लगाई। आईजी ने कहा, 'ऐसी क्या वजह है कि फरियादी को 100 किलोमीटर दूर ऑफिस आना पड़ा? अब आप इसके पास जाएंगे और मुझे रिपोर्ट देंगे।'

आईजी ने दी जानकारी

आईजी आकाश कुलहरि ने बताया कि रेंज निरीक्षण के दौरान गंभीर अनियमितताएं मिलने पर मऊरानीपुर थाने की मिशन शक्ति प्रभारी और दो महिला सिपाहियों को निलंबित किया गया है। वहीं, एसएसपी ऑफिस के एकाउंटेंट को टीए-डीए में गड़बड़ियों के चलते सस्पेंड किया गया है।

बाबरी मस्जिद में हजारों लोगों ने अदा की जुमे की नमाज, MLA हुमायूं कबीर का बड़ा दावा, TMC रच रही साजिशें

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद में बाबरी मस्जिद को लेकर तृणमूल कांग्रेस के सस्पेंड MLA हुमायूं कबीर लगातार विवादों में बने हैं. इस बार उन्होंने मस्जिद को लेकर बड़ा दावा किया है. दरअसल, उन्होंने शुक्रवार को जुमे की नमाज के दौरान लाखों लोगों की भीड़ जुटने का दावा किया है. इस दौरान सुरक्षा व्यवस्था के मद्देनजर मौके पर भारी पुलिस बल भी तैनात रहा. जुमे की नमाज के दौरान हुमायूं कबीर ने भी बाकी नमाजियों के साथ नमाज अदा की. इसके बाद उन्होंने लोगों से बात की और उनका हौसला बढ़ाया. स्नह्र हुमायूं कबीर ने कहा कि बाबरी मस्जिद की नींव रखने की जगह पर हजारों लोगों की भीड़ ने नमाज अदा की है. इस दौरान कुछ लोगों ने खिचड़ी का इंतजाम किया था. जुमे की नमाज के बाद नमाज अदा करने आए लोगों को खिचड़ी भी खिलाई गई थी. हुमायूं कबीर ने मस्जिद बनाना उनका पहला मकसद है, जो हमारी आस्था से जुड़ा है.

नकली क्यूआर कोड पर घिरे हुमायूं

कबीर

बाबरी मस्जिद बनाने के नाम पर खोले गए ट्रस्ट में अब तक कल 4 करोड़ रुपये जमा हो चुके हैं. आरोप है कि उनके ट्रस्ट अकाउंट का बारकोड नकली है. रेजिनगर के तृणमूल कांग्रेस MLA रबीउल आलम चौधरी के खिलाफ धोखाधड़ी के आरोप लगे हैं. वहीं हुमायूं कबीर के बाबरी मस्जिद ट्रस्ट के नाम पर दूसरी बड़ी गड़बड़ी सामने आई है. वेस्ट बंगाल इस्लामिक फाउंडेशन ऑफ इंडिया के कोषाध्यक्ष मोहम्मद अमीनुल शेख ने आरोप लगाया कि 9 दिसंबर से लगातार नकली क्यूआर कोड के जरिए फंड जुटाने की कोशिश की जा रही है. पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

हुमायूं बोले- मेरे खिलाफ रची जा रही साजिशें

हुमायूं कबीर ने कहा था कि हैदराबाद के सुरक्षाकर्मी उनकी सुरक्षा में तैनात रहेंगे. मंगलवार को उनके साथ सिर्फ चार सुरक्षाकर्मी दिखाई दिए. बातचीत करने पर मालूम हुआ कि ये सभी हैदराबाद के नहीं, बल्कि स्थानीय थे. इसके बाद उन्होंने चारों सुरक्षाकर्मियों को हटा दिया. हुमांयू ने कहा, मैं किसी भी स्थानीय को सुरक्षा में नहीं रखूंगा. कुछ लोग मेरे खिलाफ साजिशें रच रहे हैं, वक्त आने पर सब बताऊंगा।

सऊदी अरब के लोग निकले स्थानीय

वहीं इससे पहले बाबरी मस्जिद की नींव रखते समय मौके पर मौजूद दो लोगों को सऊदी अरब के धर्मगुरु बताए गए थे. बाद में दोनों स्थानीय निकले. इस पर हुमायूं कबीर का दावा है कि यह सब उन्हें बदनाम करने और उनकी मुहिम को कमजोर करने की कोशिश है. हुमायूं कबीर ने इन घटनाओं के पीछे तृणमूल नेता सिद्दीकुल्ला चौधरी के संगठन पर आरोप लगाए हैं।

ब्राह्मण की बेटी चाहिए... IAS संतोष वर्मा पर गिरी गाज, C M मोहन यादव ने सभी पदों से हटाया, केंद्र को भेजा प्रस्ताव

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

भोपाल- मध्य प्रदेश सरकार ने विवादित बयानों में घिरे आईएएस अधिकारी संतोष वर्मा को बर्खास्त करने की कार्रवाई शुरू कर दी है, क्योंकि यह पाया गया है कि उनकी पदोन्नति कथित तौर पर जाली दस्तावेजों के माध्यम से हासिल की गई थी और विभागीय जांच में यह निष्कर्ष निकला है कि उनका आचरण सेवा नियमों का उल्लंघन करता है. सरकार ने गुरुवार को एक बयान में यह जानकारी दी. मुख्यमंत्री के निर्देशानुसार सामान्य प्रशासन विभाग (जीएडी) द्वारा लिए गए एक महत्वपूर्ण निर्णय में, राज्य सरकार ने वर्मा को भारतीय प्रशासनिक सेवा से बर्खास्त करने की सिफारिश केंद्र सरकार से की है. आधिकारिक बयान में कहा गया है कि उन्हें राज्य प्रशासनिक सेवा से आईएएस कैडर में पदोन्नत करने के लिए 'फर्जी और जाली पदोन्नति आदेश' तैयार किए गए थे. इन कथित मनगढ़ंत कहानियों से जुड़े आपराधिक मामले पहले से ही विभिन्न अदालतों में लंबित हैं. वर्मा के खिलाफ हुई जांच में पता चला है कि उन्होंने फर्जी दस्तावेजों का इस्तेमाल करके सत्यनिष्ठा प्रमाण पत्र प्राप्त किया था. कारण बताओ नोटिस पर उनकी प्रतिक्रिया असंतोषजनक पाई गई और अधिकारियों ने गौर किया कि उन्होंने कार्रवाई के दौरान भी अभद्र और भड़काऊ बयान देना जारी रखा. परिणामस्वरूप, सरकार

ने अखिल भारतीय सेवा (अनुशासन और अपील) नियम, 1969 के तहत उनके खिलाफ औपचारिक आरोप पत्र जारी करने का निर्णय लिया है।

एक जज के खिलाफ रची साजिश

वर्मा हाल के महीनों में कई विवादों के केंद्र में रहे हैं. इंदौर की अदालतों से मिली रिपोर्टों से पता चलता है कि उसने कथित तौर पर एक घरेलू मामले में बरी होने के लिए मनगढ़ंत फैसले तैयार करने के लिए एक न्यायाधीश के साथ साजिश रची, जिससे आईएएस पदोन्नति का मार्ग प्रशस्त हो सके. सूत्रों के अनुसार, वर्मा ने विभागीय पदोन्नति समिति के माध्यम से पदोन्नति के लिए अर्हता प्राप्त करने के लिए न्यायिक रिकॉर्ड में हेरफेर किया. जालसाजी के आरोपों के अलावा, वर्मा को सार्वजनिक मंचों पर अपने भड़काऊ बयानों के लिए भी आलोचना का सामना करना पड़ा है. एक वायरल वीडियो में उन्हें भड़काऊ बयान देते हुए सुना गया, जिसकी सामुदायिक संगठनों और न्यायपालिका ने कड़ी आलोचना की. सरकार ने इन टिप्पणियों को 'गंभीर दुर्व्यवहार; और सेवा आचरण नियमों का उल्लंघन करार दिया, जिससे अनुशासनात्मक कार्रवाई का मामला और मजबूत हो गया।

IAS संतोष वर्मा ने दिया था विवादित बयान

23 नवंबर, 2025 को भोपाल में M.P. अनुसूचित जाति-जनजाति अधिकारी एवं कर्मचारी संघ (AJJAKS) के एक कन्वेंशन के दौरान संतोष वर्मा ने कहा था, 'रिजर्वेशन तब तक जारी रहना चाहिए जब तक कोई ब्राह्मण अपनी बेटी मेरे बेटे को न दे दे, या (उसका) उसके साथ रिश्ता न हो जाए '. इस बात की कई ब्राह्मण संगठनों और कम्युनिटी के नेताओं ने बहुत बुराई की, और इसे 'अभद्र, जातिवादी और ब्राह्मण बेटियों का बहुत अपमान करने वाला' कहा।

मुख्यमंत्री के निर्देश का अनुपालन करते हुए, कृषि विभाग ने वर्मा को कृषि विभाग में उप सचिव के पद से हटा दिया है. उन्हें बिना किसी विभागीय कार्यभार या कार्य के जीएडी पूल से जोड़ दिया गया है, जिससे वे प्रभावी रूप से प्रशासनिक जिम्मेदारियों से अलग हो गए हैं. केंद्र को बर्खास्तगी की सिफारिश करके और विभागीय आरोप लगाकर, राज्य ने संकेत दिया है कि धोखाधड़ीपूर्ण पदोन्नति और कदाचार को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा. अब अंतिम निर्णय केंद्र सरकार पर निर्भर करता है, जो वर्मा को आईएएस से हटाने के प्रस्ताव पर कार्रवाई करेगी।

BA पास 25 साल की कनिष्का कैसे बनी OTT ठगी की मास्टरमाइंड, विदेश में बैठे भारतीयों से ऐसे करते थे ठगी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

नोएडा पुलिस ने गुरुवार को OTT के जरिये ठगी करने वाली गैंग भंडाफोड़ किया है. पुलिस ने इस मामले में मास्टरमाइंड सहित 6 लोगों को गिरफ्तार किया है. पुलिस ने इनके पास से लैपटॉप सहित कई सामान बरामद किए हैं. नोएडा फेस-1 थाने की पुलिस और साइबर क्राइम पुलिस की जांच में इस OTT ठगी गैंग को लेकर कई हैरान करने वाली बातें सामने आई है. जानकारी देते हुए फेस- 1 थाना साइबर प्रभारी हरवीर सिंह ने बताया की यह गैंग विदेश में रहने वाले भारतीय नागरिकों को अपना निशाना बनाते थे. यह गैंग OTT प्लेटफॉर्म के सस्ते सब्सक्रिप्शन का लालच देकर विदेश में बैठे भारतीय नागरिकों से ठगी करते थे. इन लोगों ने 2 साल के अंतराल में करोड़ों रुपए की ठगी की है. चौंकाने वाली बात यह कि इस गैंग की मास्टरमाइंड 25 साल की BA पास कनिष्का है, जिसने कोविड़ काल में इग्नू से BA पास की थी. उसने कई IT जॉब सेक्टरों में काम किया. इस दौरान उसकी मुलाकात अनिल बघेल से हुई, जो कि खुद बीटेक पास है.दोनों के बीच गहरी दोस्ती थी।

सेक्टर-2 में था आलीशान ऑफिस

इन्होंने टेक्निकल कंपनियों में काम किया और फिर इस OTT प्लेटफॉर्म के सब्सक्रिप्शन को कैसे एक सब्सक्रिप्शन लेकर हजारों को बेचना है इसकी बारीकियां सीखी. इसके बाद दोनों दोस्तों ने मिलकर WEBBIZ SERVICES LLC नाम की एक कंपनी खोली और फिर एक आलीशान ऑफिस नोएडा सेक्टर-2 में खोल दिया. कंपनी में नौकरी के लिए उन लोगों को प्राथमिकता दी गई, जो कि फर्राटेदार इंग्लिश बोल सके।

100-300 डॉलर में बेचते थे OTT सब्सक्रिप्शन

इसके बाद उन्होंने कॉल सेंटर के जरिए ठगी का असली खेल शुरू कर दिया. कॉल सेंटर में काम करने वाले कर्मचारी विदेश में मौजूद भारतीय को फोन कर 100-300 डॉलर यानी 9000 से लेकर करीब 27000 रुपए तक में OTT सब्सक्रिप्शन जैसे नेटफ्लिक्स, प्राइम वीडियो, अमेजॉन की मेम्बरशिप बेचते थे. ज्यादातर लोग 24 महीने का सब्सक्रिप्शन लेते थे, लेकिन ठग उसे 4 महीने में ही बंद कर देते थे. इसके बाद जब पीड़ित फोन कर सब्सक्रिप्शन खत्म होने के बारे में पूछते थे, तो वह उन्हें पेड वीडियो देखने की बात कहकर मामले को टाल दिया करते थे और फिर दोबारा नए सिरे से सब्सक्रिप्शन लेने के लिए भारतीय ग्राहकों को मनाते थे।

6 बैंक खाते सीज

साइबर सेल प्रभारी हरवीर सिंह ने बताया कि ठगों का नोएडा सेक्टर-2 में आलीशान ऑफिस चल रहा था. उसका तकरीबन डेढ़ लाख रुपया रेंट था. साथ ही सभी वर्करों की कुल सैलरी 3 लाख रुपए सहित गाड़ियों का खर्चा कनिष्का ही मैनेज करती थी. पुलिस की जांच में करीब 6 अकाउंट्स की जानकारी सामने आई है, जिसमें लाखों रुपए का ट्रांजैक्शन हुआ है. पुलिस इन खातों की डिटेल्स मंगा रही है. सभी खातों को फ्रीज कर दिया गया है।

अंग्रेजी बोलने में माहिर थे ठग

पुलिस के मुताबिक, पकड़े गए सभी आरोपी सामान्य बैकग्राउंड से थे, लेकिन अंग्रेजी बोलने और कंप्यूटर चलाने में माहिर थे. इन सभी ने मिलकर एक फर्जी कॉल सेंटर चलाया, जिसमें पाकिस्तान, भारत और अन्य देशों के OTT प्लेटफॉर्म की पेड स्ट्रीमिंग को हैक करके बेचने का खेल चल रहा था. ठग अनिल बघेल (28) टेक्निकल हैकर था,जिसके पास IPTV बॉक्स सेटअप, लाइव चैनल कैप्चर करना और सर्वर बदलकर OTT को अनलॉक करने जैसी जिम्मेदारी थी. मनीष त्रिपाठी (32) डेटा मैनेजर का काम देख रही थी, जो कि विदेशों में रहने वाले भारतीयों का डेटा इकट्ठा करना, सब्सक्रिप्शन हिस्ट्री बनाना, पेमेंट ट्रेल छिपाने काम देख रही थी. आरोपी गौरव बघेल (23)ऑपरेशन्स टीम की जिम्मेदारी संभाल रहा था. मॉनिटरिंग सब्सक्रिप्शन कटने पर ग्राहकों को कॉल करना इसका मुख्य काम था. राधा बल्लभ (30) सॉफ्टवेयर ऑपरेटर है, कस्टम पैनल बनाना और फर्जी OTT ऐप चलाना इसका काम था. योगेश बघेल (20) नए ग्राहकों को फंसाने का काम करता था. यह फेसबुक, इंस्टा और टेलीग्राम पर विज्ञापन चलाना था और सस्ता सब्सक्रिप्शन के नाम पर लोगों को जोड़ता था. इसके अलावा कनिष्का (25) इस गैंग की मास्टरमाइंड थी, जो कि पैसा से जुड़ा सभी काम देखती थी।

वंदे मातरम् पर विवाद देश की मूल भावना से खिलवाड़

इस से ज्यादा शर्मसार करने वाली बात क्या हो सकती है कि आज लोकतंत्र के पावन मंदिर में राष्ट्रगीत को लेकर खेमेबाजी हो रही है जबकि इस पर समूचे राष्ट्र को एकमत होना चाहिए था। वंदेमातरम् गीत के 150 वर्ष पर चर्चा होने के अवसर पर लोकसभा में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि 'वंदे मातरम्' गीत की गूंज ने न सिर्फ अंग्रेजों की नींद उड़ा दी थी बल्कि पूरे भारत में उत्साह का ऐसा माहौल तैयार किया था जो न सिर्फ स्वतंत्रता का मंत्र बना बल्कि आजाद भारत के लिए भी विजन बनकर सामने आया। यह गीत आजादी का उद्?गार बन गया था और हर देशवासी इस गीत से प्रेरित होकर अंग्रेजों के खिलाफ जंग लड़ रहा था। इस गीत से देश में बने नये माहौल को देखकर अंग्रेज बौखला गये थे इसलिए उन्होंने इस गीत पर प्रतिबंध लगा दिया और इसे गाने को अपराध मानकर लोगों पर जुल्म ढहाने शुरू कर दिए थे। प्रधानमंत्री ने कहा कि 'वंदे मातरम्' पर चर्चा में कोई पक्ष और प्रतिपक्ष नहीं है क्योंकि इसी गीत से मिली प्रेरणा के कारण हम सब यहां बैठे हैं और यह हम सबके लिए पावन पर्व है।

आपको पता रहे वंदे मातरम को 1950 में भारत के संविधान सभा द्वारा भारत के राष्ट्रीय गीत के रूप में अपनाया गया। वंदे मातरम की की रचना शुरू में स्वतंत्र रूप से की गई थी और बाद में इसे बंकिम चंद्र चटर्जी के 1882 में प्रकाशित उपन्यास आनंदमठ में शामिल किया गया। इसे पहली बार रवींद्रनाथ टैगोर ने 1896 में कोलकाता में हुए कांग्रेस अधिवेशन में गाया था। एक राजनीतिक नारे के रूप में वंदे मातरम का पहली बार प्रयोग 7 अगस्त 1905 को हुआ था। इस वर्ष, 7 नवंबर 2025 को भारत के राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम की 150वीं वर्षगांठ थी, जिसका अनुवाद मां, मैं आपको नमन करता हूं, है। आज 8 दिसंबर को सदन में इस पर चर्चा हुई। जिस पर सरकार एवं विपक्षियों ने अपनी अपनी राय रखी। यह रचना, एक चिरस्थायी गान ने स्वतंत्रता सेनानियों और राष्ट्र निर्माताओं की अनगिनत पीढ़ियों को प्रेरित किया है, जो भारत की राष्ट्रीय पहचान और सामूहिक भावना के स्थायी प्रतीक के रूप में खड़ा है। बंकिम चंद्र चटर्जी द्वारा रचित, वंदे मातरम पहली बार साहित्यिक पत्रिका बंगदर्शन में 7 नवंबर 1875 को प्रकाशित हुआ था। बाद में, बंकिम चंद्र चटर्जी ने अपने अमर उपन्यास आनंदमठ में भजन को शामिल किया, जो 1882 में प्रकाशित हुआ था। इसे रवींद्रनाथ टैगोर ने संगीतबद्ध किया था। यह राष्ट्र की सभ्यता, राजनीतिक और सांस्कृतिक चेतना का एक अभिन्न अंग बन गया है। इस मील के पत्थर को मनाने का अवसर एकता, बलिदान और भक्ति के कालातीत संदेश की पुष्टि करने का अवसर प्रदान करता है। बंदे मातरम पर संसद में आज 8 दिसंबर सोमवार को विशेष चर्चा हुई और, ये ऐसे दौर में हो रहा है जब विपक्ष एसआईआर पर चर्चा चाहता है। राज्यसभा बुलेटिन में वंदे मातरम को भी जय हिंद और दूसरे शब्दों के साथ शामिल किया गया है। ममता बनर्जी का भी इस मुद्दे पर मुखर हो जाना, वंदे मातरम के बंगाल कनेक्शन की तरफ खास इशारे कर रहा है। संसद में राष्ट्रगीत वंदे मातरम् के 150 साल पूरे होने पर चर्चा हुई। पक्ष और विपक्ष दोनों ने इस विषय पर अपनी राय रखी। वंदे मातरम् पर यह बहस केवल एक रस्म नहीं है बल्कि यह ऐसे समय पर हो रही है जब इस गीत को लेकर राजनीति गरम है। नवंबर महीने में इस गीत के 150 साल पूरे होने पर पीएम मोदी ने कहा था कि कांग्रेस ने 1937 के अधिवेशन में राष्ट्रगीत वंदे मातरम् के कुछ जरूरी हिस्से हटा दिए। कांग्रेस का यह कदम विभाजन के बीज बोने जैसा था। पीएम मोदी का आरोप था कि राष्ट्रगीत को टुकड़ों में बांटकर इसकी मूल भावना कमजोर कर दी गई है। सबसे पहले वंदे मातरम् की रचना की बात करें तो बॉकम चंद्र चटर्जी ने इस राष्ट्रगीत की रचना की थी। इसे पहली बार सात नवंबर 1875 को साहित्यिक पत्रिका बंगदर्शन में प्रकाशित किया गया था। उस दिन से लेकर आजतक यह गीत करोड़ों देशवासियों के हृदय में देशभक्ति को अलख जगा रहा है। मातृभूमि की आराधना के प्रतीक इस गीत को सुनते ही ब्रिटिश अफसरों के कान खड़े हो जाते। अंग्रेजों द्वारा वंदे मातरम् गीत को गाने या छापने पर भी बैन लगा दिया गया था। आगे चलकर यह छह छंदों वाला गीत मूल रूप से बंकिम चंद्र चटर्जी के उपन्यास आनंदमठ का हिस्सा बना जो 1882 में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास में सन्यासी विद्रोह की कहानी के माध्यम से बंकिम ने ने भारत को मां दुर्गा के रूप में चित्रित किया इसमें सुफला, सुफला, मलयजशीतलाम...। यह गीत गुलामी की जंजीरों में जकड़े भारत को समृद्धि और शक्ति का सपना दिखाता था। 1896 में कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में इस गीत को एक नई पहचान मिली। रवींद्रनाथ टैगोर ने इसे संगीतमय रूप दिया और इसे कलकत्ता के अधिवेशन में गाया। संगीतमय प्रस्तुति ने इस गीत को अमर कर दिया। यह गीत जनमानस में तेजी से लोकप्रिय होने लगा। हर तरफ वंदे मातरम् की गूंज सुनाई देने लगी। तब ब्रिटिश राज ने इसे अपनी सरकार के खिलाफ खतरनाक मान लिया। उसके बाद 1905 के बंगाल विभाजन के दौरान स्वदेशी आंदोलन में यह नारा बन गया। कालांतर में इस गीत को लेकर मुसलमानों की तरफ से आपत्ति जताई जाने लगी। 1923 में कांग्रेस अधिवेशन में वंदे मातरम् गायन के समय तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष मोहम्मद अली जौहर मंच से उठकर चले गए थे। इस गीत को लेकर मुस्लिम पक्ष की आपत्ति है कि वंदे मातरम् के जरिए उन पर हिंदू देवी देवताओं की पूजा का दवाव डाला जा रहा है। वंदे मातरम् में मंदिर और दुर्गा शब्दों का इस्तेमाल हुआ है। कांग्रेस कार्यसमिति ने 1937 में तय किया कि राष्ट्रीय आयोजनों में इस गीत के केवल पहले दो पद ही गाए जाएंगे। यही कारण रहा कि 1937 में पंडित जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में हुए कांग्रेस अधिवेशन में वंदे मातरम् के केवल दो छंद ही गाए गए। उस समय से इसी नियम का पालन किया जाने लगा। आजादी के बाद इसे नियम बनाते हुए 24 जनवरी 1950 को संविधान सभा अध्यक्ष डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने वंदे मातरम् को राष्ट्रगीत घोषित कर दिया। वंदे मातरम् को आज भी आधिकारिक रूप से राष्ट्रीय गीत का दर्जा मिला हुआ है। लेकिन सरकारी समारोहों में इसके पहले के दो छंदों का ही गायन होता है। हालांकि बाल कया था। गंगाधर तिलक ने इसे राष्ट्रीय प्रार्थना और अरविंदो घोष घोष ने मंत्र कहते हुए इसे राष्ट्रगान का दर्जा देने की की मांग की थी। यह गीत राष्ट्र गान की जगह तो नहीं ले सका लेकिन राष्ट्रगीत के तौर पर आज भी करोड़ों देशवासियों को प्रेरणा दे रहा है। अब इसके 150 साल पूरे होने पर संसद में चर्चा कराई गई। बंदे मातरम आनंद मठ के संतानों द्वारा गाया जाने वाला गीत है। यह देशभक्ति के धर्म के प्रतीक के रूप में खड़ा था, जो आनंद मठ का केंद्रीय विषय था। अपने मंदिर में, उन्होंने मातृभूमि का प्रतिनिधित्व करने वाली मां की तीन मूर्तियां स्थापित कीं। बंदे मातरम के रचयिता बंकिम चंद्र चटर्जी (1838-1894) 19वीं सदी के के बंगाल बंगाल के के सब सबसे प्रमुख व्यक्तियों में से एक थे। उन्नीसवीं सदी के दौरान बंगाल के बौद्धिक और साहित्यिक इतिहास में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका है। एक प्रतिष्ठित उपन्यासकार, कवि और निबंधकार के रूप में, उनके योगदान ने आधुनिक बंगाली गद्य के विकास और उभरते भारतीय रष्ट्रवाद की अभिव्यक्ति को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया। आनंदमठ (1882), दुर्गेशनंदिनी (1865), कपालकुंडला (1866) और देवी चौधरानी (1884) सहित उनकी उल्लेखनीय रचनाएं, आत्म-पहचान के लिए प्रयासरत एक उपनिवेशित समाज की सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक चिंताओं को दर्शाती हैं। वंदे मातरम की रचना को राष्ट्रवादी चिंतन में एक मील का पत्थर माना जाता है, जो मातृभूमि के प्रति समर्पण और आध्यात्मिक आदर्शवाद के संश्लेषण का प्रतीक है। वंदे मातरम में उन्होंने देश को मातृभूमि का दर्शन कराया, जिसे माता का रूप दिया गया। अक्टूबर 1905 में, मातृभूमि को एक मिशन और धार्मिक जुनून के रूप में बढ़ावा देने के लिए उत्तरी कोलकाता में एक बंदे मातरम् संप्रदाय की स्थापना की गई थी। हर रविवार को, समाज के सदस्य प्रभात फेरी में निकलते थे, वंदे मातरम् गाते थे और मातृभूमि के समर्थन में लोगों से स्वैच्छिक योगदान स्वीकार करते थे। रवींद्रनाथ टैगोर भी कभी-कभी कभी संप्रदाय की प्रभात फेरी में शामिल होते थे। 20 मई 1906 को, बारीसाल (अब बांग्लादेश में) में, एक अभूतपूर्व वंदे मातरम जुलूस निकला। इसमें दस हजार से अधिक प्रतिभागियों, हिंदू और मुस्लिम दोनों ने भाग लिया था।

इतिहास गवाह है कि जिन्ना को खुश करने के लिए पं. जवाहर लाल नेहरू ने उन द्वारा उठाई आपत्तियों के उत्तर में लिखा था कि कांग्रेस ने वंदे मातरम् को भी राष्ट्रगान के रूप में स्वीकार नहीं किया, जबकि सत्य यह है कि आनंदमठ के संन्यासी भवानन्द की तरह आज भी देशप्रेमियों के रगों में वंदे मातरम् गीत उबाल ला देता है और मां भूमि के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर करने को तैयार हो जाता है। जिस देश के पीछे न जाने कितनी मां की गोद सूनी हो गई, कितनी महिलाओं की मांग के सिंदूर धुल गए, बंग-भंग आन्दोलन के समय जो गीत धरती से आकाश तक गूंज उठा, बंगाल की खाड़ी से जिसकी लहरें इंगलिश चैनर पार कर ब्रिटिश पार्लियामेंट तक पहुंच गई, जिस गीत के कारण बंगाल का बंटवारा नहीं हो सका, उसी गीत को अल्पसंख्यकों की तुष्टि के लिए खंडित किया गया। यहां तक कि उन्हें प्रसन्न करने के लिए मातृभूमि को खंडित किया गया। उसके बाद भी जनमानस को उद्वेलित करने वाले इस गीत को प्रमुख राष्ट्रीय गीत के रूप में स्वीकार नहीं किया गया।इस से बड़ा दुर्भाग्य कुछ नहीं हो सकता है। आज संसद में वंदेमातरम को लेकर जो खींचतान पक्ष विपक्ष कर रहा है वह भी वंदेमातरम की गरिमा से खिलवाड़ से अधिक कुछ नहीं है।

मनोज कुमार अग्रवाल

संपादकीय

परंपरा से प्रगति तक: डॉ. मोहन यादव का सांस्कृतिक नेतृत्व

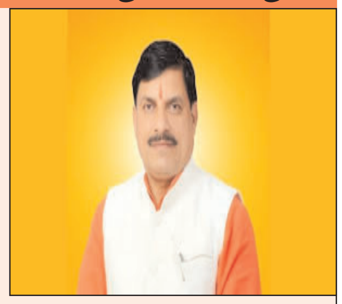

[नेतृत्व जो मिट्टी से जुड़ा, और संस्कृति जो फिर से जागी]

[जड़ों से जुड़ता विकास: मध्यप्रदेश का अद्वितीय सांस्कृतिक मॉडल]

मध्यप्रदेश की मिट्टी में आज भी वही सौंधी सुगंध तैरती है, जो सदियों से बैगा, गोंड, भीलाला और कोरकू जनजातियों की लोक-कथाओं, गीतों और अनुष्ठानों से उठती रही है। यह भूमि केवल खेतों, पहाड़ियों और घने जंगलों का भूगोल नहीं रही; यह उन अनगिनत सांस्कृतिक धरोहरों का जीवंत दस्तावेज़ भी है, जिन्हें पीढ़ियाँ अपनी बोली, अपनी स्मृतियों और अपने अनुभवों में सँजोती आईं। लेकिन समय के तेज़ प्रवाह और आधुनिकता की चमक ने इन परंपराओं की धीमी होती धड़कनों को लंबे समय तक अनसुना किया। कई कर्मा नृत्य केवल स्मृतियों में बचे, मांडना चित्र दीवारों से उतरकर संग्रहालयों की कैद में चले गए, और अनेक लोक-देवता अपने ही समुदाय की यादों से धुंधले पड़ने लगे।

इन्हीं मिटती आवाज़ों के बीच दिसंबर 2023 में जब डॉ. मोहन यादव ने मध्यप्रदेश की बागडोर संभाली, तो उन्होंने सत्ता की परिभाषा को ही बदल दिया। उनके लिए शासन केवल फाइलों, योजनाओं और वित्तीय आँकड़ों का जोड़-घटाव नहीं था—यह सांस्कृतिक चेतना को पुनर्जीवित करने का संकल्प था। वे केवल एक प्रशासक नहीं, बल्कि उस विरासत के संरक्षक बने जो समझते थे कि यदि जनजातीय समाज की जड़ें कमज़ोर हो जाएँ, तो मध्यप्रदेश अपनी आत्मा खो बैठेगा। इसलिए उन्होंने शासन को जनजातीय संस्कृति के पुनर्जागरण का माध्यम बनाया, और यह संकल्प पूरे राज्य की धड़कनों में उतरने लगा।

डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में राज्य की सांस्कृतिक आधारशिला को नए सिरे से मजबूती मिली। जनजातीय गौरव दिवस को मध्यप्रदेश ने ऐसी ऊँचाई दी कि 2025 में जबलपुर और अलीराजपुर में भव्य राज्यस्तरीय आयोजन हुए, 662 करोड़ रुपये की योजनाओं का शिलान्यास हुआ, और भोपाल में राष्ट्रीय जनजातीय कॉन्क्लेव व वैश्विक निवेशक सम्मेलन के जरिए आदिवासी संस्कृति को अंतरराष्ट्रीय मंच मिला। मंडला, डिंडवानी, छिंदवाड़ा, अलीराजपुर जैसे जिलों के जनजातीय हाट-बाज़ार पुनर्जीवित हुए, जहाँ फिर से बांसुरी की मधुर थिरकन, मिट्टी के घड़ों की सौंधी महक और बुजुर्गों की लोककथाएँ जीवंत दिखाई देती हैं। कला को बढ़ावा देने के लिए तुलसी सम्मान, देवी अहिल्याबाई पुरस्कार और पेंशन योजनाओं ने कलाकारों को नई पहचान दी। भगोरिया जैसे पारंपरिक मेले अब सिर्फ़ उत्सव नहीं, बल्कि राज्य की सांस्कृतिक पहचान के सशक्त प्रतीक बन चुके हैं।

आज जब कोई मध्यप्रदेश के किसी भी कोने में कदम रखता है—बैगा बहुल बैहर, गोंड बहुल मंडला, या भील बहुल पेटलावद—तो वहाँ की हवा में एक नई ताज़गी का संगीत सुनाई देता है। बच्चे अपनी मातृभाषा में गीत गाते हैं, महिलाएँ गुदना की परंपरा को गर्व से निभाती हैं, और युवा अपने नृत्य-रागों को फिर से गाँव के आँगन में जीवंत कर रहे हैं। यह बदलाव किसी दिखावे का परिणाम नहीं, बल्कि एक सुविचारित और संवेदनशील सांस्कृतिक पुनर्जागरण का प्रतिफल है, जिसकी धुरी स्वयं डॉ. मोहन यादव की दूरदर्शी सोच है। उनका मानना है कि विकास तभी पूर्ण होता है, जब उसकी नींव में हमारी मिट्टी की खुशबू, हमारे पूर्वजों की आवाज़ और आने वाली पीढ़ियों की मुस्कान शामिल हो। उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि सड़कें, उद्योग, योजनाएँ—ये सब तभी टिकाऊ हैं, जब उन परंपराओं की पगडंडियाँ भी मजबूत रहें जो हमारी पहचान का मूल स्रोत हैं।

मोहन यादव सरकार ने जनजातीय संस्कृति को केवल 'संरक्षित' नहीं किया—उसे फिर से साँस दी है। जहाँ कभी बैगा के डंडार नृत्य की थाप सिर्फ़ पुरानी रिकॉर्डिंगों में कैद थी, वहीं आज डिंडोरी की घाटियाँ फिर उसी लय में गूँज रही हैं। जहाँ गोंड चित्रकला घरों की दीवारों से गायब होने लगी थी, वहाँ झाबुआ की बेटियाँ पिथौरा को नए उजाले के साथ सरकारी प्रयासों से संरक्षित हो रहे हैं, जो डिंडोरी की घाटियों में गूँज रहे हैं। सहरिया का राई नृत्य राष्ट्रीय मंचों पर पहुंचा, कोरकू की रेला धुन को सरकारी संरक्षण मिला, और भील युवाओं के हाथों में अब तीर-कमान के साथ अपना गौरव और आत्मविश्वास भी लौट आया है।

डॉ. यादव ने समझा कि कोई भी शिक्षा तब तक सार्थक नहीं, जब तक आदिवासी बच्चा अपनी भाषा और अपनी कहानी के साथ स्कूल न जाए। इसी सोच के साथ मध्यप्रदेश के स्कूलों में जनजातीय भाषाओं और लोककथाओं को पाठ्यक्रम में शामिल करने के प्रयास तेज़ हुए हैं, जैसे बालागाँव से बड़वानी तक। उन्होंने साबित किया कि सम्मान केवल भाषणों से नहीं, बल्कि आचरण से मिलता है। मुख्यमंत्री स्वयं भगोरिया मेले में आदिवासियों के साथ उत्साहपूर्वक शामिल हुए और ढोल बजाकर नृत्य का आनंद लिया, मंडला जैसे क्षेत्रों में गोंड कलाकारों को जनजातीय आयोजनों में सम्मानित किया गया, और जनजातीय गौरव दिवस के अवसर पर पूरे देश ने देखा कि मध्यप्रदेश ने अपनी मिट्टी और संस्कृति को कितनी गरिमा से संसार के सामने प्रस्तुत किया।

आज मध्यप्रदेश का हर कोना इस सत्य को दोहराता है कि विकास की ऊँची इमारतें तभी खड़ी होती हैं जब उनकी नींव में अपनी भाषा की गूँज, अपने बुजुर्गों का आशीर्वाद और अपनी मिट्टी की सुगंध समाहित हो। इसलिए आज आदिवासी माँ अपने बच्चे को गोद में लेकर गर्व से कहती है— 'हम गरीब हो सकते हैं, लेकिन हमारी संस्कृति अब अनाथ नहीं है।' यह वाक्य किसी योजना का लाभ नहीं, बल्कि उस आत्मविश्वास का प्रमाण है जिसे डॉ. मोहन यादव ने अपने हर निर्णय में पोषित किया। इसलिए आज पूरा मध्यप्रदेश एक स्वर में स्वीकार कर रहा है कि यह मात्र एक सरकार नहीं, बल्कि हमारी खोई हुई सांस्कृतिक धड़कनों को वापस लाने वाला युग है—एक ऐसा समय जब परंपरा फिर से सम्मान बन गई है और जड़ें इतनी मजबूत हो गई हैं कि कोई आँधी उन्हें हिला नहीं सकती।

डॉ. मोहन यादव ने वह कर दिखाया जिसकी कल्पना तक कम लोगों ने की होगी। उनकी सरकार की शक्ति इस संतुलन में निहित है कि विकास की रफ्तार भी कम न हो और सदियों पुरानी विरासत भी उसी गति से पुनर्जीवित होती रहे। उन्होंने सिद्ध किया कि सत्ता कोई अधिकार नहीं, बल्कि उन लाखों अनसुनी आवाज़ों को सुनने की जिम्मेदारी है जिन्हें वर्षों तक उपेक्षा मिली। आज बैगा, भारिया और सहरिया का बच्चा गर्व से कहता है– 'हमारा मुख्यमंत्री हमारी बोली, हमारी परंपरा और हमारी अस्मिता का सबसे बड़ा संरक्षक है।' भील की बेटी सिर ऊँचा करके चलती है क्योंकि उसे पता है कि भोपाल की गद्दी पर बैठा नेता उसकी संस्कृति को अपना मानकर चलता है।

यही है डॉ. मोहन यादव की सबसे बड़ी विजय—एक ऐसी विजय जो किसी आँकड़े, किसी सर्वे या किसी रिपोर्ट में नहीं मापी जा सकती। यह विजय सीधे दिलों में दर्ज होती है। मध्यप्रदेश आज केवल भारत का दिल नहीं, बल्कि भारत की जनजातीय आत्मा का सबसे मजबूत, सबसे जीवंत किला बन रहा है—और इस किले की नींव में एक ही नाम है: डॉ. मोहन यादव।

प्रो. आरके जैन

भारत रूस 75 वर्ष की कूटनीतिक यात्रा और अमेरिका की नई सुरक्षा रणनीति

भारत और रूस पूर्व सोवियत संघ के राजनयिक संबंधों की 75वीं वर्षगांठ है।एक ऐसा पड़ाव जो गौरव, संघर्ष, विश्वास और ऐतिहासिक उपलब्धियों से भरा है। 1950 और 1960 के दशक में सोवियत संघ की मदद से भारत में भारी उद्योग, स्टील प्लांट, मशीन टूल्स, परमाणु ऊर्जा तथा बड़े बिजली संयंत्रों की नींव रखी गई। 1971 की भारत सोवियत मैत्री संधि ने दोनों देशों को रणनीतिक साझेदारियों के स्वर्ण युग में प्रवेश कराया। इन सात दशकों में न तो विश्वास डगमगाया और न ही नीतियों में अस्त-व्यस्तता आई।यही कारण है कि मास्को और दिल्ली की दोस्ती आज भी उतनी ही मजबूत है जितनी उस दौर में थी, जब दुनिया द्विध्रुवीय शक्ति-संतुलन से संचालित होती थी।रूस ने भारत को सैन्य रूप से सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने में असाधारण भूमिका निभाई। आज भी भारतीय सेनाओं के लगभग 60% हथियार रूसी तकनीक से निर्मित हैं।मिग -21 से लेकर सुखोई30एमकेआई टी 90 टैंक, ब्रह्मोस मिसाइल और एस-400 एयर डिफेंस सिस्टम तक। यह संबंध सिर्फ सौदेबाज़ी नहीं, बल्कि विश्वास पर आधारित दीर्घकालिक कूटनीति का उदाहरण है।इसी परिप्रेक्ष्य में, वैश्विक राजनीति के बदलते स्वरूप ने अमेरिका की नई रणनीतियों को भी प्रभावित किया है।

रूसी राष्ट्रपति व्लादिमिर पुतिन की भारत यात्रा के तुरंत बाद अमेरिका ने अपनी नई नेशनल सेक्युरिटी स्ट्रेटेजी जारी की, जिसने दुनिया के शक्ति-संतुलन पर गहरा संदेश दिया है। 33 पन्नों के इस दस्तावेज़ ने अमेरिकी प्राथमिकताओं, साझेदारियों और चुनौतियों का नया खाका पेश किया है। यह नई रणनीति क्या संकेत देती है और भारत रूस संबंधों की 75 वर्ष की यात्रा के संदर्भ में इसका क्या महत्व है।

भारत रूस संबंध 75 वर्ष

विश्वास और रणनीतिक स्थिरता की अनूठी मिसाल है।भारत और रूस के रिश्ते सिर्फ कूटनीतिक संवाद तक सीमित नहीं रहे, बल्कि उन्होंने समय की कसौटी पर खुद को बार-बार सिद्ध किया है।सोवियत संघ की तकनीकी और औद्योगिक सहायता 1950-60 के दशक में यूएसएसआर ने भारत को भारी उद्योगों का बुनियादी ढांचा दिया। भिलाई और बोकारो स्टील प्लांट, मशीन टूल्स फैक्ट्रियां, पावर प्लांट, अंतरिक्ष कार्यक्रम आदि इन सभी में रूसी सहयोग का गहरा प्रभाव रहा।यह वही समय था जब दुनिया दो ध्रुवों में बंटी हुई थी और नवस्वतंत्र भारत को एक ऐसे सहयोगी की जरूरत थी, जो विकास के हर मोर्चे पर साथ खड़ा रह सके।

1971 की अभूतपूर्व मैत्री संधि सार्थक सिद्ध हुई।भारत-सोवियत मैत्री, सहयोग और पारस्परिक सहायता संधि ने दोनों देशों के बीच ऐसी सामरिक समझ पैदा की, जिसने 1971 के युद्ध में निर्णायक भूमिका निभाई। यह संधि सिर्फ सैन्य सहयोग नहीं, बल्कि राजनीतिक विश्वास का सबसे ठोस प्रमाण थी।

सैन्य शक्ति का स्तंभ भारत की रक्षा क्षमता का बड़ा हिस्सा रूस से मिला।मिग -21 ने भारत की वायु शक्ति की रीढ़ मजबूत की। सुखोई 30 एमकेआईआज भी भारत का सबसे भरोसेमंद फाइटर रहा है।ब्रह्मोस मिसाइल ने भारत को सुपरसोनिक हथियारों की श्रेणी में अग्रणी बनाया।एस-400 सिस्टम भारत की वायु सुरक्षा का नया कवच बना।रूस की यह सैन्य सहायता किसी भी तत्कालिक सौदे की तरह नहीं थी, बल्कि दीर्घकालिक साझेदारी पर आधारित थी।

भारत अमेरिका की द्विपक्षीय सौदेबाजी में उस समय विरोधाभास देखने को मिला है,तब अमेरिका के रास्ट्रपति ट्रम्प ने भारत की आयात निर्यात प्रणाली को प्रभावित कर उस पर 25 प्रतिशत टैरिफ लगाई गई थी।अमेरिका को भारत की आवश्यकता क्यों है? वैश्विक भू-राजनीति में यह स्पष्ट है कि आज अमेरिका के लिए भारत उतना ही जरूरी है जितना भारत के लिए अमेरिका।चीन अमेरिका की सबसे बड़ी चुनौती है।

चीन का उभार अमेरिका के लिए एक दीर्घकालिक रणनीतिक चुनौती बन चुका है। एशिया प्रशांत से हिंद प्रशांत तक चीन की आक्रामक नीतियों ने अमेरिका को ऐसे साझेदारों की तलाश में धकेला है, जिनके पास जनशक्ति, भौगोलिक स्थिति और सैन्य क्षमता तीनों हों।भारत इस संदर्भ में स्वाभाविक रूप से सबसे उपयुक्त साझेदार है।

अमेरिका की नई राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति और वैश्विक नेतृत्व की पुनर्स्थापना का प्रयास आज के परिपेक्ष्य में अहम भागीदारी निभा रहा है।पुतिन की भारत यात्रा के तुरंत बाद अमेरिकी प्रशासन द्वारा जारी की गई नेशनल सिक्युरिटी स्ट्रेटेजी कई मायनों में महत्वपूर्ण है। इस दस्तावेज़ ने अमेरिकी कूटनीति और सामरिक प्राथमिकताओं को नए ढंग से परिभाषित किया है।

पश्चिमी गोलार्ध में अमेरिकी प्रभुत्व का पुनर्स्थापन

दस्तावेज़ का मुख्य उद्देश्य यह स्थापित करता है कि अमेरिका अपने निकटतम भौगोलिक क्षेत्र पश्चिमी गोलार्ध में अपने प्रभाव को पुनर्स्थापित करेगा।

लैटिन अमेरिका और कैरेबियन में बढ़ते चीनी प्रभाव को चुनौती देना भविष्य प्रभावित करने की सम्भावना है। इस बीच नशीले पदार्थों, अवैध प्रवास और संगठित अपराध पर नियंत्रण जरूरी है।आर्थिक सहयोग को रणनीतिक सुरक्षा से जोड़ना उचित होगा।यह स्पष्ट संकेत है कि अमेरिका अब वैश्विक स्तर पर छिटपुट नीतियों के बजाय क्षेत्रीय सुदृढ़ता पर जोर देगा।एनएसएस में पहली बार यूरोप पर इतने स्पष्ट और कड़े शब्दों में टिप्पणी की गई है।

यूरोपीय देशों की बढ़ती निर्भरता के कई कारण हो सकते है।

रक्षा खर्च में कमी,रूस और चीन के साथ स्वतंत्र समीकरण, और अमेरिका इन मुद्दों को अपने सामरिक हितों के विपरीत मानता है।33 पन्नों के दस्तावेज़ में भारत, रूस और चीन तीनों को विशेष स्थान दिया गया है, लेकिन तीनों के संदर्भ अलग-अलग हैं।अमेरिका ने भारत को प्रमुख लोकतांत्रिक शक्ति ,हिंद-प्रशांत क्षेत्र में स्वाभाविक साझेदारऔर तकनीकी और आर्थिक क्षमता वाला राष्ट्र के रूप में परिभाषित किया है।यह संदेश है कि अमेरिका भारत के साथ दीर्घकालिक साझेदारी को महत्वपूर्ण मानता है, चाहे भारत रूस के साथ अपने संबंध कैसे भी बनाए रखे।एनएसएस में रूस को रणनीतिक प्रतिद्वंद्वी सैन्य शक्ति वाला आक्रामक राष्ट्र के रूप में वर्णित किया गया है।लेकिन साथ ही यह भी माना गया है कि रूस को पूरी तरह अलग-थलग करना लंबे समय में संभव नहीं।दस्तावेज़ में चीन को सबसे बड़ा रणनीतिक प्रतिस्पर्धी आर्थिक और सैन्य चुनौती करार दिया गया है।

अमेरिका की पूरी रणनीति चीन-निरोध पर केंद्रित है। भारत की भूमिका और महत्व बढ़ा है।एनएसएस का संदेश स्पष्ट है कि अमेरिका भारत को सिर्फ साझेदार नहीं, बल्कि वैश्विक नेतृत्व के एक स्तंभ के रूप में देखता है।लोकतंत्र

जनसंख्या भौगोलिक स्थिति

भारत रूस संबंधों का ऐतिहासिक पक्ष इन चारों वजहों से भारत विश्व राजनीति में संतुलनकारी शक्ति बन चुका है। रूस भारत संबंध अमेरिका को स्वीकार नही है।नई रणनीति में अमेरिका यह मानकर चल रहा है कि भारत और रूस के संबंध ऐतिहासिक हैं और अमेरिका इन्हें बदल नहीं सकता। इसलिए अमेरिका भारत पर दबाव डालने के बजाय उसके साथ सहयोग बढ़ाने की नीति अपना रहा है। चीन के खिलाफ भारत निर्णायक मुड़ में है। अमेरिका की रणनीति का सबसे महत्वपूर्ण तत्व यह है कि चीन को संतुलित करने में भारत अब अपरिहार्य है।

भारत रूस की 75 वर्ष पुरानी दोस्ती ने अंतरराष्ट्रीय राजनीति में भारत की स्थिति को मजबूत किया है। यह संबंध विश्वास, सहयोग और साझा हितों पर आधारित है।दूसरी ओर, अमेरिका की नई राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति यह दर्शाती है कि दुनिया एक नए शक्ति संतुलन की ओर बढ़ रही है, जहाँ भारत रूस का पुराना सहयोगी अमेरिका का नया रणनीतिक साझेदार चीन का भू-क्षेत्रीय संतुलनकर्ता

तीनों भूमिकाओं में निर्णायक महत्व रखता है। आज भारत के पास वह क्षमता और सामर्थ्य है, जहाँ वह वैश्विक कूटनीति का केंद्र बन सकता है।

अमेरिका, रूस और चीन तीनों शक्तियाँ इसे स्वीकार कर चुकी हैं। इस प्रकार भारत रूस संबंधों की 75वीं वर्षगांठ और अमेरिका की नई रणनीति दोनों मिलकर दुनिया को यह संदेश देते हैं कि आने वाला दशक भारत-केंद्रित कूटनीति का दशक होगा।

कांतिलाल मांडोत

बुनियादी शिक्षा में वैज्ञानिक प्रयोगवाद राष्ट्र निर्माण की आधारशिला

बुनियादी शिक्षा में प्रयोगवाद का अर्थ केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित शिक्षा नहीं, बल्कि जीवन के अनुभवों, सामाजिक यथार्थ और वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित शिक्षा से है। आज का समय ज्ञान, मूल्य, तकनीक और मानवीयता के समन्वय का समय है, जहां बुनियादी और नैतिक शिक्षा किसी भी समाज, व्यक्ति और राष्ट्र के नैतिक, मानसिक व आर्थिक विकास की दिशा निर्धारित करती है। किसी भी राष्ट्र की सबसे बड़ी संपत्ति उसका शिक्षित, सुसंस्कृत और जागरूक नागरिक वर्ग होता है। जिस देश में शिक्षा जितनी गहरी, संस्कृति जितनी समृद्ध और प्रयोगवाद जितना सशक्त होता है, वह राष्ट्र उतना ही विकसित, पुष्पित और पल्लवित होता है। आज भारत में विद्यालयों में नामांकन दर 97% तक पहुंच चुकी है और नई शिक्षा नीति 2020 में प्रबुनियादी शिक्षा में वैज्ञानिक प्रयोगवाद राष्ट्र निर्माण की आधारशिला.योगात्मक शिक्षा, स्किल डेवलपमेंट तथा वैचारिक स्वतंत्रता पर विशेष बल दिया गया है, जो यह प्रमाणित करता है कि आधुनिक भारत शिक्षा को केवल नौकरी की अनिवार्यता नहीं बल्कि राष्ट्रनिर्माण की आधारशिला के रूप में देखता है। शिक्षा के साथ वैज्ञानिक दृष्टिकोण और विश्लेषणात्मक चिंतन आज विश्व की सबसे बड़ी जरूरत है। संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट के अनुसार 2030 तक विश्व की लगभग 40% नौकरियां उन कौशलों पर आधारित होंगी जो समस्या-समाधान, रचनात्मकता और नवाचार की क्षमता से संचालित होंगी। अतः प्रयोगवादी शिक्षा के बिना आधुनिक समाज की उन्नति संभव ही नहीं। हर राष्ट्र में ऐसे विचारशील, नैतिक, ईमानदार और राष्ट्रहित के प्रति समर्पित लोगों का समूह होना चाहिए, जो लोकतंत्र की आत्मा को नई ऊर्जा दे सकें, राष्ट्रहित के मूल मंत्र को दिशा दे सकें और जनसामान्य को यह बता सकें कि प्रगति का वास्तविक पथ विचारों की स्वतंत्रता, संस्कृति तथा नैतिकता के समन्वय से होकर गुजरता है। बिना संस्कृति, बिना संस्कार और बिना वैचारिक क्षमता के कोई समाज या राष्ट्र वैश्विक स्तर पर स्थाई विकास की कल्पना भी नहीं कर सकता। इतिहास साक्षी है कि सिद्धांत और वैचारिक धारा को कभी कुचला नहीं जा सकता। व्यक्ति मर सकता है, पर उसकी विचारधारा कालजयी बनकर सदियों तक जनमानस का मार्गदर्शन करती रहती है। भारत के संदर्भ में वैचारिक स्वतंत्रता गणतंत्र की मूल आत्मा है। व्यक्ति का विचार उसकी अंतःप्रज्ञा है, और जब यही विचार किसी कारणवश दबा दिए जाते हैं तो यह दमन व्यक्ति की आत्मा को घायल करता है। इतिहास बताता है कि विचारों पर लगाया गया कोई भी प्रतिबंध जितना कठोर होता है, विचार उतनी ही तीव्रता से जनता के भीतर पुनर्जीवित होते हैं। यही कारण है कि दमनकारी शासन कभी स्थायी नहीं रह सका। प्राचीन यूनान के सुकरात इसका सर्वोत्तम उदाहरण हैं एक कुरूप किन्तु अत्यंत विद्वान व्यक्ति, जिसकी मौलिकता और सत्यपरक विचारधारा ने जनमानस को चकित कर दिया था। राजनीतिक सत्ता उनके विचारों से भयभीत थी, इसलिए उन्हें मृत्युदंड दे दिया गया; किन्तु विचार अमर हो गए और सुकरात एक शाश्वत प्रतीक बनकर आज भी जीवित हैं। अमेरिका में अब्राहम लिंकन का उदाहरण भी उतना ही सशक्त है। जब उन्होंने दासप्रथा के विरुद्ध आवाज उठाई, तब तत्कालीन शासक वर्ग को यह एक क्रांति की आहट लगी, परिणामस्वरूप उनकी हत्या कर दी गई; पर लिंकन का विचार आज भी मानवता का आधार स्तंभ है और दासता के उन्मूलन का वैश्विक ऐतिहासिक प्रेरक। इसी प्रकार स्वामी विवेकानंद ने कहा था– 'हम जो सोचते हैं वही बन जाते हैं।' विचार ही व्यक्ति का निर्माण करते हैं और वही उसे दुष्ट या महान बनाते हैं। विवेकानंद के विचार आज भी उतने ही शक्तिशाली हैं जितने उनके जीवनकाल में थे; उनका शरीर नष्ट हुआ पर उनके विचार आज भी समाज को प्रेरित करने की क्षमता रखतें है। विचारों की यह अमरता किसी भी तानाशाह के लिए उतनी ही खतरनाक है, जितनी सुप्त सिंह की गुफा में प्रवेश करना। जब जनता के भीतर शुद्ध और सशक्त विचारधारा जागृत होती है, वहां क्रांति के जन्म को कोई रोक नहीं सकता चाहे वह फ्रांस की क्रांति हो, भारत का स्वतंत्रता संग्राम हो या आधुनिक युग में सामाजिक न्याय की कोई नई धारा हो। विचारों का प्रवाह जब एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुंचता है, तो उसका प्रभाव बहुगुणित होता जाता है। अकेले का विचार जब जनमानस तक पहुंचता है तो वह अकेला नहीं रहता, वह एक विचार-यात्री बन जाता है जिसके पीछे हजारों-लाखों कदम चलने लगते हैं। इसी सघनता से क्रांति जन्म लेती है और इतिहास का पुनर्लेखन होता है। परंतु नियंत्रणवादी समाजों में, जैसे चीन या उत्तर कोरिया, विचारों की स्वतंत्रता को सीमित कर दिया गया। वहां सत्ता ने अभिव्यक्ति के माध्यमों को बाधित किया, जिसके कारण वैचारिक विस्तार विद्वानों तक ही सीमित रह गया। यह केवल मानवाधिकारों का हनन नहीं बल्कि मानव सभ्यता की गति को रोकने का प्रयास है। किसी स्वस्थ लोकतांत्रिक राष्ट्र के लिए विचारों की स्वतंत्रता, नवीनता और उत्कृष्टता अनिवार्य है। भारत जैसे राष्ट्र में इसका और भी बड़ा महत्व है क्योंकि यह विविधताओं का देश है। यहां 22 अनुसूचित भाषाएं, 121 से अधिक मातृभाषाएं, और हजारों सांस्कृतिक परंपराएं हैं; ऐसे देश में शिक्षा, विचार और संस्कृति का संतुलन ही राष्ट्र को वैश्विक स्तर पर अग्रणी बना सकता है। भारत की त्ळक्क में शिक्षा, विज्ञान और तकनीक का योगदान लगातार बढ़ रहा है, और आज भारत वैश्विक स्टार्ट-अप हब बन चुका है जहां 1,00,000 से अधिक स्टार्ट-अप और 112 यूनिकॉर्न सक्रिय हैं यह प्रयोगवादी शिक्षा की सफलता का प्रत्यक्ष प्रमाण है। निष्कर्षत विचार, सिद्धांत और प्रयोगवादी शिक्षा किसी भी राष्ट्र की रीढ़ हैं। व्यक्ति को दबाया जा सकता है, पर विचारों को नहीं; सत्ता सीमित हो सकती है, पर विचार असीमित होते हैं। यही विचार जब समाज में गति पाते हैं तो युगों का निर्माण करते हैं और व्यक्ति मृत्यु के बाद भी अमर हो जाता है। विचारों की यह अमरता ही मानव सभ्यता की सबसे बड़ी शक्ति है और यही भविष्य के भारत का आधार भी।

संजीव ठाकुर

मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक रवि कुमार अवस्थी द्वारा सुशीला स्टेडी बेल एकेडमी 117-मोहल्ला विजय लक्ष्मी नगर परगना खैराबाद तहसील व जनपद -सीतापुर से प्रकाशित तथा महावीर आफसेट 28, हीवेट रोड लखनऊ से मुद्रित। सम्पादक रवि कुमार अवस्थी समाचार पत्र में छपे समस्त समाचार संवाददाताओं के अपने श्रोत एवं संकलन हैं, जिनसे सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **नोट:**-उपरोक्त सभी पद अवैतनिक एवं स्वयंसेवी हैं तथा समाचार पत्र से सम्बंधित सारे विवादो का न्याय क्षेत्र सीतापुर होगा। R.N.I NO. UPHIN/2012/43078 मो0 नं0 -9511151254,E-Mail :- news@swatantraprabhat .com

संक्षिप्त खबरें

आवारा जानवरो की विकट समस्या से जूझ रहे ग्राम दौलतपुर के किसान

मिश्रिख (सीतापुर) आचार्य विनोबा भावे जन सेवा संस्थान के प्रदेश मुख्य सचिव रामकृपाल राठौर ने जिला अधिकारी को एक शिकायती पत्र देकर आरोप लगाया है। कि उनकी ग्राम पंचायत हुमायूंपुर के मजरा दौलतपुर में वर्तमान समय आवारा पशुओं का आतंक चल रहा है। यह आवारा पशु पलक झपकते ही किसानों की फसले नष्ट कर देते हैं। इन पशुओं में कई पशु ऐसे हैं जो किसानों को मारने के लिए दौड़ा लेते हैं। कई बार अपनी फसल बचाते समय किसान घायल भी हो चुके हैं। आरोप है। कि प्रदेश के मुख्य मंत्री द्वारा इन आवारा पशुओं के संरक्षण हेतु प्रत्येक न्याय पंचायत पर अस्थाई पशु आश्रय स्थलों का निर्माण कराया गया है। परंतु ब्लाक और तहसील के जिम्मेदार अधिकारी इस बात को लेकर संजीदा नहीं है। उन्होंने बीते समय प्रदेश के मुख्य मंत्री को भी एक शिकायती पत्र दिया था। परंतु कोई कार्यवाही न होने के कारण आज जिला अधिकारी को शिकायती पत्र देकर इन आवारा पशुओं की विकट समस्या से निजात दिलाए जाने की मांग की हैं।अगर आवारा पशुओं की समस्या का समय रहते प्रबंध नही कराया जाएगा तो किसान धरना-प्रदर्शन करने के लिए विवश हो जायेगे।जिसकी सारी जिम्मेदारी शाशन-प्रशासन की होगी।

श्रीमद्भागवत कथा का हवन-पूर्णाहुति संग भव्य समापन, भंडारे में उमड़े श्रद्धालु

लालगंज (रायबरेली)। क्षेत्र के ऐहार गांव स्थित सुप्रसिद्ध बाल्हेश्वर मंदिर परिसर में चल रही श्रीमद्भागवत कथा का बुधवार को हवन और पूर्णाहुति के साथ विधिवत समापन हो गया। समापन अवसर पर आयोजित विशाल भंडारे में बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचे और प्रसाद ग्रहण किया।कथा का शुभारंभ 3 दिसंबर से हुआ था। इस दौरान कथा व्यास पं. झिलमिल महाराज ने सुखदेव-राजा परीक्षित संवाद, श्रीकृष्ण जन्म, बाल लीलाएं, असुर वध, सुदामा-कृष्ण मित्रता, कंस वध, रुक्मणी विवाह सहित अनेक प्रसंगों के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण के दिव्य गुणों का भावपूर्ण वर्णन किया।बुधवार को हवन और पूर्णाहुति के बाद कन्या भोज का आयोजन किया गया, इसके पश्चात विशाल भंडारे का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में घनश्याम सोनी, किरण सोनी,संजू महराज,शिव गोपाल गुप्ता, रज्जन गुप्ता,शिवबरन कुशवाहा, राजू तिवारी, टेनी महाराज सहित बड़ी संख्या में भक्तजन मौजूद रहे।

सीतापुर के लिए गौरव का क्षण: एन के0 के0 सी0 के0 ओ.एस.डी. राहुल वर्मा को रसायन शास्त्र में पीएच-डी उपाधि प्रदान

सीतापुर नंद किशोर कैलाश चंद्र महाविद्यालय, टिकरा, बिसवां, सीतापुर के ओ.एस.डी. श्री राहुल वर्मा को महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी (बिहार) द्वारा रसायन शास्त्र विषय में पीएच-डी की उपाधि प्रदान की गई है। यह उपलब्धि न केवल उनके व्यक्तिगत शैक्षणिक जीवन का उत्कर्ष है, बल्कि समूचे सीतापुर जनपद की बौद्धिक सम्पन्नता में एक महत्वपूर्ण अध्याय का संवर्धन भी है। रसायन शास्त्र जैसे वैज्ञानिक एवं अनुसंधान-प्रधान विषय में डॉक्टरेट उपाधि प्राप्त करना कठोर अनुसंधान-प्रक्रिया, अनुशासन, वैचारिक परिष्कार तथा दीर्घकालिक शोध-समर्पण का प्रतिफल है। राहुल वर्मा की यह सफलता शिक्षा जगत के लिए प्रेरक आदर्श प्रस्तुत करती है तथा उच्च शिक्षा के शोध-मानकों को नई ऊर्जा प्रदान करती है। इस प्रतिष्ठित उपलब्धि पर विभिन्न शिक्षाविदों एवं विद्वतजनों ने गहन प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उन्हें हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित की हैं। शुभेच्छुओं में–लखनऊ विश्वविद्यालय के असिस्टेंट डीन, ष्ठष्ठ डॉ. सुधाकर वर्मा; नंद किशोर कैलाश चंद्र महाविद्यालय के निदेशक संतोष वर्मा; चीफ प्रॉक्टर पुष्पेन्द्र सिंह; डॉ. शिवाशु; डॉ. अंकित वर्मा; डॉ. देवेंद्र कश्यप; आर. डी. वर्मा; डॉ. चंद्रशेखर प्रजापति; डॉ. विंदा प्रसाद धुरिया; ब्रिंदारक नाथ मिश्र; विनय दीक्षित; राकेश शुक्ल; ओ. पी. मिश्र; कैलाश नाथ शुक्ल; दिवाकर वर्मा; सतीश चंद्र वर्मा तथा नितिन वर्मा

विशेष रूप से हर्ष व्यक्त किया है

सभी विद्वानों ने यह मत व्यक्त किया कि राहुल वर्मा की यह शैक्षणिक उपलब्धि न केवल उनके व्यक्तिगत परिश्रम का साक्ष्य है, बल्कि महाविद्यालय की शैक्षिक संरचना, मार्गदर्शन और शोध-अनुकूल वातावरण की भी पुष्टि करती है। इस उल्लेखनीय सफलता ने सीतापुर जनपद को गौरवान्वित किया है। यह उपलब्धि भावी शोधार्थियों के लिए प्रेरक प्रकाश-स्तम्भ सिद्ध होगी तथा उच्च शिक्षा के क्षेत्र में नये मानकों की स्थापना करेगी।

राइस मिल के बाहर अवैध वाहन खड़े, स्कूली बच्चों की सुरक्षा पर संकट

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता
शैलेन्द्र शुक्ला

निगोहा। दयालपुर में वन विभाग के पास एक निजी राइस मिल पर वाहनों का अनैतिक व अवैध रूप से खड़ा होना राहगीरों के लिए बड़ी परेशानी बन गया है। राइस मिल के ठीक बगल में स्थित केडीएस मेमोरियल पब्लिक स्कूल और बाल शिक्षा सदन के कारण प्रतिदिन लगभग 400-500 बच्चों का आना-जाना होता है। छुट्टी के समय भीड़ बढ़ने से दुर्घटना का गंभीर खतरा मंडराने लगता है, लेकिन इसके बावजूद राइस मिल संचालक वाहनों को हटाने को तैयार नहीं हैं।

स्थानीय लोगों के अनुसार दिनभर सड़क पर भारी वाहनों की लंबी कतार लगी रहती है, जिसकी वजह से सिसेंडी और उन्नाव जिले की ओर जाने वाले वाहनों को निकलने में भारी दिक्कत होती है। ट्रैफिक जाम की समस्या के बीच स्कूलों के छात्र-छात्राओं की सुरक्षा पर भी बड़ा खतरा बना रहता है।

ग्रामीणों ने प्रशासन से मांग की है कि स्कूलों के समय में विशेष रूप से सड़क पर खड़े भारी वाहनों पर रोक लगाई जाए, ताकि किसी अनहोनी से बचा जा सके। वही इसी मार्ग से दर्जनों गांव के ग्रामीण भी साइकिल बाइक सहित ट्रैक्टर ट्राली से गुजरते है।और सड़क पर भारी वाहनों के खड़े रहने की वजह से इन सभी को भी निकलने में असुविधाओं का समाना करना पड़ता है।

15 फीट गहरी खाई में मिला शव इलाक़े में मचा हड़कंप आधार कार्ड से शिनाख्ती का प्रयास

● निशुल्क नेत्र एवं स्वास्थ्य जागरूकता शिविर सम्पन्न

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सीतापुर जनपद सीतापुर के सदरपुर में बृहस्पतिवार की सुबह एक दर्दनाक हादसा सामने आया, जब तालाब किनारे स्थित 15 फीट गहरी खाई में एक युवक का शव बाइक समेत पड़ा मिला शव मिलने की सूचना ग्रामीणों के बीच फैलते ही मौके पर भारी संख्या में लोग एकत्र हो गए घटना की जानकारी थाना सदरपुर पुलिस को दी गई जिसके बाद पुलिस टीम मौके पर पहुंची और जांच पड़ताल में जुट गई है मौके से मिले पहचान पत्र (IE कार्ड) के आधार पर मृतक की शिनाख्त अनुज वर्मा के रूप में हुई है अनुज वर्मा लखनऊ के गुडंबा थाना क्षेत्र का निवासी था और बहराइच में एक मोबाइल कंपनी में इंजीनियर के पद पर कार्यरत था। पुलिस के मुताबिक, प्राथमिक जांच में यह साफ हुआ है कि युवक किसी काम से बहराइच गया हुआ था और देर रात वापस लखनऊ लौटते समय हादसे का शिकार हो गया आशंका है कि बाइक अनियंत्रित होकर सड़क किनारे खाई में जा गिरी, जिससे युवक की मौके पर ही मौत हो गई ग्रामीणों ने बताया कि सुबह खेतों की ओर जाते समय कई लोगों ने बाइक और शव दिखाई देने के बाद उन्होंने इसकी जानकारी पुलिस को दी मौके पर पहुंची पुलिस ने पंचनामा भरकर शव को पोस्टमार्टम के लिए जिला मुख्यालय भेज दिया है पुलिस अधिकारियों का कहना है कि प्रथम दृष्टया मामला सड़क हादसे का लग रहा है हालांकि पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के कारणों की पुष्टि हो सकेगी स्थानीय लोगों ने बताया कि हादसे वाली सड़क पर रात में यातायात कम होता है और अंधेरा अधिक रहता है जिसके कारण दुर्घटनाएं अक्सर होती रहती हैं पुलिस ने आगे की कार्रवाई करते हुए परिजनों को सूचना भेज दी है और पूरे मामले की गहन जांच की जा रही है!!

आरेडिका चिकित्सालय में विशेष मानसिक स्वास्थ्य शिविर, 45 बच्चों की जांच हुई

लालगंज (रायबरेली)। आधुनिक रेल डिब्बा कारखाना (आरेडिका) चिकित्सालय में बुधवार को बच्चों के लिए विशेष मानसिक स्वास्थ्य और विकास मूल्यांकन शिविर लगाया गया। शिविर में कुल 45 बच्चों की जांच की गई। आरेडिका चिकित्सालय और ग्लोब हेल्थ रिहैब सेंटर की विशेषज्ञ टीम ने बच्चों का विस्तृत परीक्षण किया। टीम ने उन बच्चों की जांच की जिन्हें बोलने, सुनने, व्यवहार या विकास से जुड़ी कठिनाइयाँ होती हैं। स्पीच डिले, आई कॉन्टैक्ट की कमी, संवाद में समस्या, ऑटिज़्म जैसी स्थितियों वाले कई बच्चों का भी मूल्यांकन हुआ। चिकित्सकों ने अभिभावकों को बच्चों के विकास के बारे में स्पष्ट जानकारी दी। उन्हें घर पर किए जा सकने वाले अभ्यास भी बताए गए। स्पीच थेरेपी, ऑक्यूपेशनल थेरेपी, बिहेवियर थेरेपी और विशेष शिक्षा से जुड़े महत्वपूर्ण सुझाव दिए गए। शिविर में बड़ी संख्या में अभिभावक अपने बच्चों के साथ पहुंचे। विशेषज्ञ टीम ने हर बच्चे की स्थिति के अनुसार परीक्षण और परामर्श दिया। आरेडिका के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी आरएन तिवारी ने बताया कि इस शिविर से अभिभावकों में जागरूकता बढ़ी है। इससे परिवारों को बच्चों के विकास संबंधी स्थिति का सही मूल्यांकन भी मिल सका है।

आत्महत्या नहीं, गला दबाकर हुई थी युवक की हत्या, दो और आरोपी गिरफ्तार

लालगंज (रायबरेली)। ससुराल में आए युवक की हत्या के मामले में पुलिस ने कार्रवाई तेज कर दी है। मंगलवार को पुलिस टीम ने दो और आरोपियों को गिरफ्तार कर उन्हें जेल भेज दिया। इससे पहले मृतक की पत्नी और ससुर को भी जेल भेजा जा चुका है।उन्नाव जिले के बिहार थाना क्षेत्र के लोनियनखेड़ा निवासी अजीत कुमार अपनी ससुराल आया हुआ था। इसी वर्ष 24 अगस्त को उसका शव उन्नाव हाईवे किनारे बने एक कमरे में फांसी के फंदे से लटका मिला था। शुरुआत में मामला आत्महत्या जैसा प्रतीत हुआ, लेकिन पोस्टमार्टम रिपोर्ट ने पूरे मामले का खुलासा कर दिया। रिपोर्ट में स्पष्ट हुआ कि अजीत की मौत गला दबाने से हुई थी।इसके बाद मृतक के पिता ने बेटे की हत्या का आरोप लगाते हुए सात ससुरालीजनों के खिलाफ तहरीर दी थी। पुलिस ने कार्रवाई करते हुए पहले मृतक की पत्नी विमला और ससुर विश्वनाथ को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था। मंगलवार को पुलिस ने उसकी सास मालती देवी और साले राजू उर्फ राज बहादुर को भी गिरफ्तार कर लिया। इंस्पेक्टर प्रमोद कुमार सिंह ने बताया कि दोनों आरोपियों को जेल भेज दिया गया है, जबकि शेष फरार आरोपियों की तलाश की जा रही है।

एडीसीपी ने श्री गोपेश्वर गोशाला को बताया मॉडल,उत्कृष्ट प्रबंधन की सराहना

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

मलिहाबाद। गुरुवार दोपहर अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त एडीसीपी गोपीनाथ सोनी ने मलिहाबाद स्थित श्री गोपेश्वर गोशाला का दौरा किया। उन्होंने गोवंशों के रखरखाव और प्रबंधन का बारीकी से जायजा लिया। गोशाला की उत्कृष्ट व्यवस्था और साफ-सफाई से प्रभावित होकर एडीसीपी सोनी ने इसे एक मॉडल गोशाला बताया और प्रबंधक उमाकांत गुप्ता के प्रयासों की दिल खोलकर सराहना की।गोशाला आगमन पर एडीसीपी सोनी ने सबसे पहले परिसर में स्थित श्री चिंताहरण हनुमानजी के दर्शन किए और विधिवत पूजा-अर्चना की। इसके पश्चात, उन्होंने गोशाला में पल रहे लगभग 250 गौवंशों को अपने हाथों से गुड़ खिलाया और उनका कुशलक्षेम जाना।एडीसीपी गोपीनाथ सोनी ने प्रबंधक उमाकांत गुप्ता द्वारा 250 से अधिक गौवंशों के लिए किए गए उचित प्रबंधन, साफ-सफाई और बेहतरीन रखरखाव की व्यवस्था की विशेष रूप से प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि यह गोशाला अन्य संस्थाओं के लिए एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है कि किस प्रकार गौसेवा और प्रबंधन को कुशलतापूर्वक संचालित किया जा सकता है।इस अवसर पर महंत कैवल्य गिरी महाराज ने एडीसीपी सोनी को शुक्रवार से शुरू हो रही भागवत ज्ञान कथा के लिए ससम्मान आमंत्रित किया। इस निरीक्षण के दौरान, पंडित लवकुश बाजपेई, प्रधान संजय साहू, सोनू सिंह, व्यापार मंडल अध्यक्ष आशीष गुप्ता, भोला नाथ गुप्ता सहित दर्जनों गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

अनुदेशक सहित चार पर मुकदमा दर्ज, पीडब्लूडी में टेंडर डालने पर ठेकेदार को बंधक बनाकर धमकी देने का आरोप

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सीतापुर जनपद सीतापुर में पीडब्लूडी में टेंडर मैनेज कराने के आरोप में एक अनुदेशक और उसके दो साथियों के खिलाफ बड़ी कार्रवाई हुई है ठेकेदार को जान से मारने की धमकी, लूट और बंधक बनाने जैसी गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज किया है अब विभागीय कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। मालूम हो कि शिक्षा विभाग में तैनात अनुदेशक महेंद्र पाठक तथा उनके साथी संजय सिंह निवासी सिंघौंडा, स्वयं को महोली विधायक का प्रतिनिधि बताते हुए पीडब्लूडी के एक ठेकेदार को टेंडर न डालने की धमकी दे रहे थे इस संबंध में एक ऑडियो और वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ जिसमें ठेकेदार को 'देख लेने' जैसी धमकी देते हुए स्पष्ट रूप से सुना और देखा जा सकता है आरोप है कि धमकी देने के बाद महेंद्र पाठक अपने साथियों के साथ ठेकेदार के मित्र की दुकान, सर्राफा मंडी पहुंचे, जहां उस समय ठेकेदार अनिल गुप्ता मौजूद थे। आरोप है कि वहां भी आरोपियों ने ठेकेदार को बंधक बनाकर डराने-धमकाने का प्रयास किया पूरी घटना दुकान में लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई। पीड़ित ठेकेदार ने इस मामले की शिकायत पुलिस अधीक्षक से मंगलवार को की थी जिस पर संज्ञान लेते हुए एसपी के निर्देश पर बुधवार देर रात नगर कोतवाली पुलिस ने आरोपी महेंद्र पाठक, संजय सिंह और एक अन्य व्यक्ति के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता की धारा 309 (4), 127(2) और 351(3) के तहत मुकदमा दर्ज किया है प्रभारी कोतवाल ने बताया कि मामले की जांच जारी है और साक्ष्यों के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी। गौरतलब है कि पीडब्लूडी में गुणवत्ता पूर्ण कार्य सुनिश्चित करने के लिए शासन द्वारा 'प्रहरी एप' की शुरुआत की गई थी ताकि ठेकेदार पारदर्शी तरीके से ऑनलाइन टेंडर डाल सकें हालांकि वायरल वीडियो और ऑडियो ने इस व्यवस्था पर सवाल खड़े कर दिए हैं सूत्रों के अनुसार जिले में टेंडर मैनेजमेंट का खेल लंबे समय से चल रहा है वहीं पूरे मामले पर महोली विधायक शशांक त्रिवेदी ने कहा कि उनका कोई प्रतिनिधि नहीं है और केंद्र व प्रदेश सरकार की जीरो टॉलरेंस नीति में किसी प्रकार का मैनेजमेंट स्वीकार नहीं किया जाएगा!!

हलोर ग्राम के श्री बालाजी मंदिर तक पक्की सड़क और पुलिया निर्माण तथा हाई मास्ट लाइट की मांग तेज,ट्रस्ट ने सीएम योगी से लगाई गुहार

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

महराजगंज रायबरेली। उत्तर प्रदेश के रायबरेली जिले के महराजगंज तहसील क्षेत्र में स्थित महाराजगंज ब्लॉक के समसपुर हलोर ग्राम में श्री बालाजी पवन तनय संकट मोचन सेवा समिति ट्रस्ट द्वारा संचालित श्री बालाजी आश्रम तक पहुंचने वाली सड़क की स्थिति जर्जर बनी हुई है। ट्रस्ट के पदाधिकारियों ने मुख्य सड़क से मंदिर तक पक्की सड़क और पुलिया के निर्माण की मांग की है, लेकिन अब तक इस पर कोई कार्रवाई नहीं हुई है। ट्रस्ट ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और लोक निर्माण विभाग के मंत्री जितेंद्र प्रसाद से तथा डीएम से इस मुद्दे पर तत्काल हस्तक्षेप की अपील की है।

ट्रस्ट के पदाधिकारियों में संदीप दास, अविनाश चंद्र,के अनुसार, समसपुर हलोर वाया ओसाह मेन सड़क से मंदिर तक का मार्ग वर्तमान में कच्चा है, जिसकी लंबाई लगभग 150 मीटर है। बरसात के मौसम में इस मार्ग पर पानी भर जाता है,जिससे श्रद्धालुओं और भक्तों को मंदिर पहुंचने में भारी कठिनाई का सामना करना पड़ता है। मंदिर में प्रतिदिन बड़ी संख्या में भक्त दर्शन के लिए आते हैं और यहां सामाजिक एवं धार्मिक कार्य भी नियमित रूप से आयोजित होते हैं। कच्चे मार्ग के कारण न केवल आवागमन प्रभावित होता है, बल्कि सुरक्षा संबंधी जोखिम भी बढ़ जाते हैं।

ट्रस्ट ने इस समस्या के समाधान के लिए कई स्तरों पर प्रयास किए हैं। पदाधिकारियों ने बताया कि उन्होंने जिलाधिकारी रायबरेली सहित अन्य संबंधित अधिकारियों, कर्मचारियों और स्थानीय नेताओं को पत्र के माध्यम से इस मुद्दे से अवगत कराया है। इसके अलावा, क्षेत्रीय विधायक से भी अनुमोदन प्राप्त किया गया है, लेकिन अब तक कोई सुनवाई नहीं हुई है। ट्रस्ट के एक पदाधिकारी ने कहा, 'हमने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और लोक निर्माण मंत्री जितेंद्र प्रसाद से इस सड़क और पुलिया के निर्माण की मांग की है। यह न केवल धार्मिक महत्व का विषय है, बल्कि स्थानीय निवासियों और श्रद्धालुओं की सुविधा से जुड़ा है। भक्तों की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए इस कार्य को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

ट्रस्ट ने यह भी मांग की है कि सड़क निर्माण के साथ-साथ एक लाइट मास्ट की व्यवस्था भी की जाए, ताकि शाम के समय आवागमन सुरक्षित हो सके। पदाधिकारियों का कहना है कि ग्राम सभा द्वारा कच्चे मार्ग का निर्माण तो कराया जा सकता है, लेकिन पक्की सड़क और पुलिया के लिए सरकारी सहयोग आवश्यक है। उन्होंने उम्मीद जताई कि मुख्यमंत्री और मंत्री इस मांग पर ध्यान देंगे और जल्द ही निर्माण कार्य शुरू कराएंगे। इस मुद्दे पर स्थानीय निवासियों का भी समर्थन है। एक स्थानीय भक्त ने बताया, 'मंदिर हमारे गांव की शान है। यहां हर साल हजारों लोग आते हैं, लेकिन सड़क की खराब हालत के कारण कई बार दुर्घटनाएं हो चुकी हैं। सरकार को इस पर तुरंत कार्रवाई करनी चाहिए। ' अभी तक लोक निर्माण विभाग या जिला प्रशासन की ओर से कोई आधिकारिक बयान नहीं आया है। ट्रस्ट ने चेतावनी दी है कि यदि जल्द ही सुनवाई नहीं हुई तो वे आगे के कदम उठाने पर विचार करेंगे, जिसमें धरना-प्रदर्शन शामिल हो सकता है। यह मामला ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी सुविधाओं की कमी को उजागर करता है, जहां धार्मिक स्थलों तक पहुंच भी एक चुनौती बनी हुई है।

घने कोहरे में खड़े ट्रक से कटराई बस चार लोग घायल, लहरपुर- तंबौर मार्ग पर हुआ हादसा

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सीतापुर जनपद सीतापुर के लहरपुर में तंबौर मार्ग पर गुरुवार सुबह घने कोहरे में खड़े ट्रक से प्राइवेट बस टकरा गई टक्कर इतनी तेज थी की बस का अगला हिस्सा बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। इसके साथ ही बस में सवार 4 यात्री गंभीर घायल हो गए। हादसे के वक्त बस में 35 यात्री सवार थे। बताया जाता है कि सुबह के समय कोहरा अधिक होने के बावजूद बस चालक तेज रफ्तार से वाहन चला रहा था। यात्री प्रेम सागर पाण्डेय ने बताया कि ट्रक सड़क पर खड़ा था और दृश्यता कम होने के कारण बस चालक को ट्रक नजर नहीं आया जिसके कारण बस सीधी ट्रक से जा भिड़ी टक्कर इतनी जोरदार थी कि बस का अगला हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया और यात्री घबरा कर बाहर निकल आए। हादसे में खलीकुन निशा (45) पत्नी इस्लाम निवासी काशीपुर मल्लापुर थाना तंबौर गंभीर रूप से घायल हो गई। वहीं रोशन (49) पुत्र महेश निवासी अज्जयपुर थाना तंबौर, मनसुखा (45) पुत्र देवकी निवासी सकरन और प्रेम सागर पाण्डेय (66) पुत्र राधेलाल निवासी पलौली थाना सकरन को हल्की-फुल्की चोटें आई हैं घटना की सूचना मिलते ही 108 एम्बुलेंस मौके पर पहुंची और घायलों को स्थानीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाकर भर्ती कराया जहां सभी का इलाज जारी है बताया गया कि हादसे के बाद बस चालक वाहन छोड़कर मौके से फरार हो गया। इधर, बस में सवार अन्य यात्री भी दूसरे साधनों से अपने गंतव्य के लिए रवाना हो गए पुलिस मामले की जांच कर रही है और बस चालक की तलाश जारी है!!

शिक्षा सेवा चयन आयोग में अध्यक्ष पद के लिए 32 से अधिक आवेदन, संख्या और बढ़ने की संभावना

लखनऊ: उत्तर प्रदेश शिक्षा सेवा चयन आयोग के अध्यक्ष पद के लिए 32 से अधिक अभ्यर्थियों ने आवेदन किया है। सभी उम्मीदवारों ने 10 दिसंबर को अंतिम तिथि के दिन निर्धारित प्रारूप में अपने आवेदन शाम छह बजे तक उच्च शिक्षा विभाग में जमा कराए। विभाग का कहना है कि अंतिम तिथि वाले दिन आमतौर पर आवेदन बढ़ते हैं, इसलिए संख्या और बढ़ने की संभावना है।आयोग के अध्यक्ष का कार्यकाल तीन वर्ष का होगा। इस पद के लिए 65 वर्ष तक की आयु वाले अभ्यर्थी ही पात्र थे। चयनित अध्यक्ष को 1,75,000 रुपये मासिक वेतन के साथ राज्य सरकार द्वारा देय सभी भत्ते मिलेंगे। आयोग की पहली अध्यक्ष प्रो. कीर्ति पांडेय के इस्तीफे के बाद 26 सितंबर से 21 अक्टूबर तक पहले दौर के लिए आवेदन आमंत्रित किए गए थे। उस चरण में 67 उम्मीदवारों ने आवेदन किया था। स्क्रीनिंग में 37 अभ्यर्थी योग्य पाए गए थे, लेकिन साक्षात्कार शुरू नहीं हो सका। इसके बाद अर्हता संबंधी अधिनियम में संशोधन किया गया और 19 नवंबर को नए सिरे से विज्ञापन जारी किया गया।

न्यायालय के आदेश पर महिला समेत छह के खिलाफ गंभीर धाराओं में कोतवाली पुलिस ने दर्ज किया मुकदमा

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

महराजगंज/रायबरेली: न्यायालय के आदेश पर कोतवाली पुलिस ने धोखाधड़ी एवं कूटरचित दस्तावेज तैयार कर बेची गई जमीन के मामले में एक महिला समेत छह के खिलाफ गंभीर धाराओं में मामला पंजीकृत कर लिया है। आपको बता दें कि, मामला शिवगढ़ थाना क्षेत्र के पूरे पंडित मजरे ओसाह गांव का है। गांव निवासी अर्जुन पुत्र माता प्रसाद ने न्यायालय को दिए गए 173(4) बी एन एस एस के तहत दिए गए प्रार्थना पत्र में न्यायालय को बताया कि, उसके पिता माता प्रसाद की वर्ष 2017 की 10 जून को मौत हो गई थी। पिता की देहांत के बाद उसके विधिक वारिसान के साथ महराजगंज कोतवाली क्षेत्र के सलेथू गांव निवासी सतीश कुमार पुत्र शिवराम का नाम धोखाधड़ी कर खाते में दर्ज कर लिया गया। भुक्त भोगी ने न्यायालय को बताया राजस्व निरीक्षक के प क 11 को न्यायालय में स्थगित किया गया ।खतौनी में अंकन हुआ।

आरोप है कि, मामले से जुड़े आरोपी सतीश कुमार ने धोखाधड़ी करते हुए कूट रचित दस्तावेज तैयार कर उसके पिता की जमीन को शिवगढ़ थाना क्षेत्र के नवलगंज मजरे पर खुर्द गांव निवासी राम रानी पत्नीरामकुमार एवं राकेश कुमार पुत्र जगन्नाथ एवं ओसाह गांव निवासी नंदकिशोर पुत्र श्री पाल को बिगाड़ 22 जुलाई को उपनिबंधक कार्यालय में जमीन बेच दी गई। भुक्तभोगी ने न्यायालय को बताया महाराजगंज पुलिस को प्रार्थना पत्र दिया गया ।एफआईआर नहीं दर्ज की गई। पुलिस अधीक्षक को प्रार्थना पत्र देकर न्यायालय की शरण ली। न्यायालय ने तथ्यों का परिशीलन कर महाराजगंज एसओ को मामला दर्ज कर विवेचना के आदेश दिए।

न्यायालय के आदेश पर पुलिस ने मामले से जुड़े सतीश कुमार पुत्र शिवराम, राम रानी पत्नी रामकुमार, राकेश कुमार पुत्र रामेश्वर प्रसाद, नंदकिशोर पुत्र श्रीपाल, राकेश कुमार पुत्र जगन्नाथ व रामसागर पुत्र जगन्नाथ के खिलाफ गंभीर धाराओं में मंगलवार को मामला पंजीकृत कर लिया है कोतवाल जगदीश यादव ने बताया कि, न्यायालय के आदेश पर मामले से जुड़े छह आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है।

अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस पर हुई गोष्ठी

चित्रकूट: मानवाधिकार मिशन जनपद चित्रकूट द्वारा अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस का आयोजन जिला मुख्यालय में जिलाध्यक्ष विनय कुमार त्रिपाठी के नेतृत्व में किया गया। जिसमें राष्ट्रीय विधि सचिव जितेन्द्र कुमार उपाध्याय ने कहा कि जनपद चित्रकूट में पुनः संगठन को मजबूत किया जाएगा। पदाधिकारियों समेत सभी पीड़ितों की समस्याओं के समाधान के लिए आला-अधिकारियों से मिलकर प्रयास किए जाएंगे। साथ ही राष्ट्रीय नेतृत्व को भी जिले की समस्याओं से अवगत कराया जाएगा। प्रांतीय सचिव संतोष कसेरा ने बताया कि कई बड़े कार्यक्रमों के आयोजन की रूपरेखा प्रांतीय अध्यक्ष व राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा बनाई जा रही है। जिलाध्यक्ष विनय कुमार त्रिपाठी ने कहा कि जिले में संगठन का पुनर्गठन किया जा रहा है। सक्रिय पदाधिकारियों को टीम में शामिल करते हुए नवीनीकरण की प्रक्रिया शुरु कर दी गई है। जिसमें काम करने वाले कार्यकर्ताओं को महत्व दिया जाएगा। जिला सचिव डॉ प्रमोद कुमार कटिया ने आभार व्यक्त किया। इस मौके पर नंदकिशोर, जितेन्द्र चौरसिया, कुलदीप त्रिपाठी, अमन उपाध्याय, राजेश शुक्ला, धर्मेन्द्र तिवारी, श्रीराम सोनी, चंदन सोनी, हेमराज सिंह, विनोद सोनकर, विनोद सिंह, सोनू, राकेश सिंह आदि मौजूद रहे।

शादी से पहले हुई दूल्हे की मौत दुल्हन बेसुध, एकटक शव को देखती और चीख पड़ती, ट्रैक्टर-ट्राली में घुसा ई रिक्शा, रॉड सीने के आरपार

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सीतापुर जनपद सीतापुर में शादी से पहले 19 साल के दूल्हे की हादसे में मौत हो गई। दूल्हा सुबह ई-रिक्शा से सामूहिक विवाह के लिए जा रहा था कोहरे के चलते ई-रिक्शा आगे चल रहे ट्रैक्टर-ट्रॉली में घुस गया। दूल्हा ई-रिक्शा में मुंह के बल गिर पड़ा। फुटरेस्ट के पास का एंगल उसकी छाती में आर-पार हो गया। मौके पर ही उसने दम तोड़ दिया। ई-रिक्शा में उसके पिता समेत 7 और लोग बैठे थे। इनमें से 4 लोग घायल हो गए। राहगीरों ने सभी को अस्पताल पहुंचाया दूल्हे की मौत की खबर सुनकर दुल्हन और उसकी मां रोते हुए अस्पताल पहुंचीं दुल्हन एकटक अपने दूल्हे के शव को देखती रही और बीच-बीच में चीख पड़ती थी हादसा सुबह 8 बजे जिला मुख्यालय से 30 किलोमीटर दूर सीतापुर-गोला मार्ग पर इमलिया सुल्तानपुर थाना क्षेत्र में हुआ। दूल्हा अंकित कुमार इमलिया सुल्तानपुर थाना के टीकर बहादुरपुर गांव का रहने वाला था। 6 भाइयों में तीसरे नंबर पर था उसके भाइयों में मोनू, सोनू, पंकज, अनीश और जितिन शामिल हैं पूरा परिवार खेती करता है। उसकी शादी पिता शिवकुमार (45) ने रामकोट के अंगदपुर गांव निवासी पूजा से तय की थी मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के तहत गुरुवार को ही शादी होनी थी सामूहिक शादी समारोह का आयोजन अंगदपुर परसेंडी में सुबह 11 बजे से होना था सुबह 7 बजे अंकित अपने पिता शिवकुमार (45), मां शिवपति (42) और गांव के चालक अंकित सिंह (35) के साथ ई-रिक्शा से रवाना हुआ था दूल्हे समेत कुल 7 लोग बैठे थे अंकित और उसके पिता ई-रिक्शा की अगली सीट पर बैठे थे सुबह 8 बजे सीतापुर-गोला मार्ग पर विशुनपुर गांव के पास घने कोहरे के चलते आगे चल रहे ट्रैक्टर-ट्रॉली चालक ने अचानक ब्रेक मार दिया कोहरे के कारण ई-रिक्शा चालक को कुछ दिखाई नहीं दिया इससे पहले कि वह ब्रेक लगाता, ई-रिक्शा जाकर ट्रैक्टर-ट्रॉली में घुस गया। टक्कर इतनी भीषण थी कि दूल्हे की मौके पर ही मौत हो गई टक्कर लगते ही शिवकुमार और ड्राइवर भी मुंह के बल आगे की ओर गिर पड़े राहगीरों की सूचना पर इमलिया सुल्तानपुर प्रभारी श्यामू कनौजिया पुलिस फोर्स समेत मौके पर पहुंचे घायलों को जिला अस्पताल ले जाया गया। दूल्हे के पिता शिवकुमार की नाक में चोट आई है उन्होंने रोते हुए बताया- मैं और बेटा आगे बैठे थे अचानक जोर की टक्कर हुई। देखते ही देखते ई-रिक्शा का लोहे का एंगल अंकित की छाती में घुस गया हम जब तक कुछ समझ पाते, वह खत्म हो गया। वहीं, लड़के के मामा सर्वेश ने बताया- परसेंडी में होने वाले सामूहिक विवाह में शामिल होने सभी लोग जा रहे थे अंकित की शादी को लेकर पूरा परिवार बहुत खुश था तभी हादसा हो गया खुशियां मातम में बदल गई। दुल्हन की मां राजेश्वरी रोते हुए अस्पताल पहुंचीं। उन्होंने कहा- आज ही मेरी बेटी की अंकित से शादी थी। काफी खोजबीन के बाद अच्छा रिश्ता मिला था बेटी का रो-रोकर बुरा हाल है वह रोए जा रही है। एएसपी आलोक सिंह ने बताया- कोहरे में ट्रैक्टर-ट्राली के अचानक ब्रेक मारने से ई-रिक्शा उसमें घुस गया था। हादसे में एक युवक की मौत हुई है, 4 लोग घायल हैं। मृतक अपनी शादी के लिए ही जा रहा था। ट्रैक्टर चालक फरार हो गया है। सीसीटीवी से उसकी तलाश की कोशिश की जा रही है!!

संक्षिप्त खबरें

विश्व मानवाधिकार दिवस के उपलक्ष में नेहरू डिग्री कॉलेज बुढ़ार में किया गया विधिक जागरूकता शिविर

मध्यप्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, जबलपुर के निर्देशन तथा माननीय प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश / अध्यक्ष महोदय श्री काशीनाथ सिंह, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, शहडोल के मार्गदर्शन में एवं श्री सुशील कुमार अग्रवाल जिला न्यायाधीश/अध्यक्ष तहसील विधिक सेवा समिति, बुढ़ार एवं श्री ऋषव दीक्षित श्री लक्ष्मण रोहित व्यवहार न्यायाधीश बुढ़ार की उपस्थिति में दिनांक 10.12. 2025 को विश्व मानवाधिकार दिवस के उपलक्ष्य में नेहरू डिग्री कॉलेज बुढ़ार में विधिक जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। उक्त शिविर में उपस्थित छात्र-छात्राएं को कानून से संबंधित जानकारी, संविधान से संबंधित प्रश्न/वार्तालाप, मौलिक अधिकार, एवं अन्य विषयों में जागरूक किया गया। शिविर में समस्त प्रोफेसर एवं छात्र- छात्राएं व विधिक सेवा समिति न्यायालय बुढ़ार से संबंद्ध सामाजिक कार्यकर्ता अभिषेक एवं शिवांगी विश्वकर्मा उपस्थित रहे।

मतदाता सूची से डेढ दर्जन परिवारों के नाम गायब, प्रभावितों ने लगाए गम्भीर आरोप

हमीरपुर :- सुमेरपुर विकासखण्ड की ग्राम पंचायत विदोखर पुरई के डेढ़ दर्जन परिवारों के नाम मतदाता सूची में गायब होने से ग्रामीण परेशान है। साथ ही बीएलओ हलाकान हो रहे हैं। विदोखर पुरई निवासी शिवनाथ सविता, उदयभान यादव, उस्मान खान, गनी खान, चंद्रपाल सविता आदि ने बताया कि हम सभी 2003 में मतदाता थे और प्रत्येक चुनाव में मतदान करते रहें हैं एस आई आर के लिए बीएलओ को दी गई मतदाता सूची में उनके परिवार के सभी नाम गायब है। इस वजह से वह लोग मतदाता फॉर्म नहीं भर पा रहे हैं। बीएल ओ वीरपाल ने बताया कि डेढ़ दर्जन परिवारों के नाम मतदाता सूची में नहीं मिल रहे है। इससे यह परिवार अभी तक फॉर्म नहीं जमा कर सके हैं।

पूर्व परिचित युवक पर युवती को भगाने का आरोप

हमीरपुर :- घर से शादी में देने के लिए गिफ्ट खरीदने की बात कहकर निकली युवती रहस्यमय तरीके से गायब हो गई जिसपर पुलिस ने पहले से परिचित युवक पर मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। मौदहा कोतवाली क्षेत्र के ग्राम मांचा निवासी इलियास अली ने कोतवाली में दिए शिकायती पत्र में बताया कि,बीते आठ दिसंबर को उसकी लडकी रहनुमा एक शादी में देने के लिए गिफ्ट लेने की बात कहकर मौदहा गई थी लेकिन वहां से गायब हो गई। पीडित ने बताया कि जानकारी करने पर पता चला कि उसकी पुत्री को पहले से परिचित भमौरा निवासी अलीम खां पुत्र हबीब खां जिसका अक्सर उनके घर आना जाना था बहला फुसला कर कहीं ले गया है। पीडित की तहरीर पर पुलिस ने मामला दर्ज कर जाँच शुरू कर दी है।

जीवन का लक्ष्य मोक्ष का मार्ग ढूंढना होना चाहिए- आत्मानंद

हमीरपुर :- सुमेरपुर कस्बा के गायत्री तपोभूमि प्रांगण में रामकथा के छठवें दिन कथा व्यास महामंडलेश्वर आत्मानंद गिरि महाराज ने कहा कि जीवन का लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति का साधन ढूंढना होना चाहिए यह राम नाम से स्मरण से ही संभव होता है। रामकथा के छठवें दिन कथा व्यास ने कहा कि पाकिस्तान की आबादी 22 करोड़ है जबकि हमारे देश में देवी देवता ही 33 करोड़ है जब हमारे देवता ही उनसे अधिक हैं तब पाक हमारा क्या बिगाड़ पाएगा। उन्होंने कहा कि रामनाम जप से मनुष्य भवसागर पार कर लेता है परमात्मा की नाव सागर को पार करा देती है। कलयुग में मोक्ष का साधन केवल प्रभु का नाम है। मनुष्य का शरीर पंच तत्वों से बना है। इन तत्वों में बहुत शक्ति है। इस दौरान कथा के परीक्षित बिंदा साहू, दुर्गा साहू, कृष्णा शुक्ला, उषा द्विवेदी, भूरी परिहार सहित सैंकड़ो लोग मौजूद रहे।

डॉ कमल गगोई, रबी दास को 2025 वर्ष के धेमाजी रत्न पुरस्कार और डॉ उत्तम दास को धेमाजी गौरव पुरस्कार से सम्मानित करने का घोषणा

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

धेमाजी असम। धेमाजी के लेखक साहित्यिक शिक्षाविद रबी दास और मरीढल महाविद्यालय के सेवानिवृत्त अध्यक्ष, विशिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता डॉ कमल गोगोई को 2025 वर्ष के धेमाजी रत्न पुरस्कार के निर्वाचित किया गया। इस संदर्भ में गत 9 दिसंबर को धेमाजी जिला सर्किट हाउस में जिला साहित्य सभा के अध्यक्ष रंजीत चिरिंग के अध्यक्षता में एक बैठक किया गया बैठक में 2025 वर्ष के धेमाजी गौरव पुरस्कार के लिए दर्पण के भाषा के शोधकर्ता डॉ उत्तम दास को निर्वाचित किया गया। जिले से साहित्य शिक्षा के श्रेत्र में योगदान देते आ रही 60 वर्ष के उर्ध्व के दो विशिष्ट व्यक्तियों को हर साल धेमाजी रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया जा रही हैं। इसी तरह समग्र असम के साथ देश- विदेशों में दर्पण के भाषा से लिखित ग्रंथों से परिचीत डॉ दास को 2025 साल के धेमाजी गौरव पुरस्कार से सम्मानित करने का फैसला लिया गया। अगले 12 ओर 13 दिसंबर में धेमाजी सिटी कॉलेज में दो दिनों के कार्यक्रम के साथ धेमाजी जिला साहित्य समारोह 2025 के 13 तारीख को दुपहर की आम बैठक में इन पुरस्कारों को प्रदान किया जाएगा। धेमाजी जिला साहित्य सभा के अध्यक्ष रंजीत चिरिंग के अध्यक्षता में हुई बैठक में फैसला लिया गया। बैठक में जिला साहित्य सभा के सचिव प्रेमानंद तालुकदार, धेमाजी रत्न और गौरव पुरस्कार निर्वाचन समिति के उपाध्यक्ष ऊषा बरगोहेन, जिला साहित्य सभा के पूर्व अध्यक्ष एवं सदस्य तीलेन गोगोई, मीनेश्वर चेतिया, पुरस्कार निर्वाचन समिति के सदस्य पल्लवी तामुली उपस्थित थे।

पूरन रामप्रकाश दीक्षित महाविद्यालय में एमए तृतीय सेमिस्टर के तीन और लोदीपुर के अभिनवप्रज्ञा महाविद्यालय के बीएससी रसायन विज्ञान के सात छात्रों ने छोड़ी परीक्षा

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

हमीरपुर :-बुंदेलखंड विश्वविद्यालय की सेमेस्टर परीक्षाओं में वृहस्पतिवार से बीए ,बीएससी व एमए प्रथम सेमेस्टर की परीक्षाए शुरू हुई।विश्विद्यालय से आई उड़नदस्ता टीम ने जिले के कई महाविद्यालयो में परीक्षाओं का औचक निरीक्षण कर सीसी टीवी कैमरे भी देखे। मुस्करा विकास खंड क्षेत्र के गांव गहरौली में स्वर्गीय पूरन रामप्रकाश दीक्षित महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ लोकेंद्र नाथ पांडेय ने बताया कि गुरुवार की सुबह मीटिंग में बीए पांचवे सेमेस्टर विषय अंग्रेजी ,एमए तृतीय सेमेस्टर विषय हिंदी व राजनीति विज्ञान की परीक्षा 25 छात्राओं को देनी थी जिनमें 3 अनुपस्थिति रहीं।दोपहर पाली में बीए तृतीय सेमेस्टर माइनर अनिवार्य विषय की 98 छात्राए परीक्षा में शामिल रहीं।वहीं शाम पाली में 27 ने परीक्षा दी।कस्बा बिवांर के हीरानन्द पीजी कालेज बिवांर के प्राचार्य डॉ अभिनन्दन सिंह ने बताया कि गुरुवार की सुबह पाली में बीए पंचम सेमेस्टर विषय अंग्रेजी ,एमए प्रथम सेमेस्टर विषय इतिहास,गृहविज्ञान, शिक्षा शास्त्र की परीक्षा के लिए 47 छात्राये पंजीकृत थी जिसमे 1 अनुपस्थिति रही,दोपहर में आयोजित हुई बीए तृतीय सेमेस्टर माइनर विषय की परीक्षा में 159 परीक्षार्थी शामिल रहे।शाम पाली में शुरू हुई बीएससी प्रथम सेमेस्टर विषय रसायन विज्ञान,बीए प्रथम सेमेस्टर विषय इतिहास व एमए तृतीय सेमेस्टर विषय गृहविज्ञान की 55 छात्राओं को परीक्षा देनी थी जिसमे 1 ने अपनी परीक्षा छोड़ दी।लोदीपुर निवादा में संचालित अभिनव प्रज्ञा महाविद्यालय के केंद्राध्यक्ष डॉ शिवमंगल तिवारी ने बताया कि गुरुवार की सुबह पाली में आयोजित हुई परीक्षा में 79 ने अपनी परीक्षा दी।वही दोपहर पाली में बीए तृतीय सेमेस्टर विषय अनिवार्य माइनर विषय की परीक्षा 205 छात्र/छात्राओ को देनी थी जिसमे 3 ने परीक्षा छोड़ दी।वही

शाम पाली में एमए तृतीय सेमेस्टर विषय गृहविज्ञान विषय एवम बीए विषय इतिहास व बीएससी विषय रसायन विज्ञान प्रथम सेमेस्टर की 167 छात्र/छात्राओ को परीक्षा देनी जिसमे 7 ने अपनी परीक्षा छोड़ दी।

श्रीभूमि जिले के दूल्लभछड़ा में चायजनजाति आदिवासी फुटबॉल फाइनल सम्पन्न, गम्भीरा टीम 3-0 से विजेता

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

श्रीभूमि जिले के रामकृष्णनगर विधानसभा क्षेत्र के दूल्लभछड़ा बागान मैदान में चायजनजाति और आदिवासी कल्याण विभाग तथा खेल एवं युवा कल्याण विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 17 वर्ष आयु वर्ग की 2025-26 फुटबॉल प्रतियोगिता का फाइनल मुकाबला उत्साह और रोमांच के साथ सम्पन्न हुआ। फाइनल मैच में गम्भीरा और लालछड़ा की टीमें आमने-सामने थीं। निर्धारित समय तक चले कड़े संघर्ष में गम्भीरा ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 3-0 से जीत दर्ज कर टूर्नामेंट का खिताब अपने नाम किया। मैदान में ग्रामीणों और खेल प्रेमियों की भारी भीड़ उमड़ी और पूरे माहौल में उत्सव जैसा उत्साह देखा गया। कार्यक्रम की शुरुआत राष्ट्रीय गीत के साथ हुई, जिसके बाद आयोजकों ने प्रतियोगिता को सफल बनाने के लिए सभी प्रतिभागियों और सहयोगियों का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर जिले के खेल भौतिक प्रशिक्षक मिथिश्वर बसुमतारी विशेष रूप से उपस्थित रहे। मैच संचालन की ज़िम्मेदारी रेफरी संजीव कानू, राजेश कूर्मी, सदाम हुसैन, निहार सिन्हा, असित सिन्हा तथा डीएलएमसी समिति के गौरोमणि शर्मा ने निभाई। रामकृष्णनगर लेवल संस्थान की समिति के सदस्यों ने भी आयोजन में सक्रिय भूमिका निभाई। वर्तमान सरकार की 'सबका साथ, सबका विकास' की नीति के तहत ग्रामीण क्षेत्रों में खेल और युवाओं के प्रोत्साहन के लिए किए जा रहे प्रयासों को भी इस आयोजन से मजबूती मिली है। गम्भीरा टीम की जीत पर खिलाड़ियों और समर्थकों में खासा उत्साह देखा गया।

डूडा के परियोजना अधिकारी ने राठ कस्बे के शेल्टर होम का किया औचक निरीक्षण

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

हमीरपुर :- राठ कस्बे के मलौंहा रोड पर स्थित शेल्टर होम (आश्रय गृह) का आज बुधवार को हमीरपुर के नगरीय विकास अभिकरण डूडा इकाई के परियोजना अधिकारी पैगाम हैदर ने औचक निरीक्षण कर शेल्टर होम आश्रय गृह की व्यवस्थाओं का जायजा लिया। तथा संबंधित कर्मचारियों को साफ सफाई सहित अन्य जरूरी दिशा निर्देश दिए। तथा इसके अलावा उन्होंने प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना के अंतर्गत प्राप्त होने वाले आवेदनों की कमी पर भी चिंता जताते हुए लोगों को प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना के प्रति जागरूक करने के लिये कर्मचारियों को निर्देश दिए। उन्होंने बताया कि डूडा के तहत छोटे दुकानदारों और रेहड़ी-पटरी वालों को 10 हजार रुपये से लेकर 50 हजार रुपये तक का लोन मुख्य रूप से प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना के अंतर्गत दिया जाता है। उन्होंने बताया कि आज बुधवार को उन्होंने राठ नगर के मलौंहा रोड पर स्थित शेल्टर होम (आश्रय गृह) का निरीक्षण किया है उन्होंने बताया कि शेल्टर होम में पुरूष डॉरमेट्री और महिला डॉरमेट्री में व्यवस्थाएं बेहतर मिली हैं तथा साफ सफाई की व्यवस्था भी ठीक थे। शौचालय और पानी तथा लाइट की व्यवस्था संतोषजनक मिली है। उन्होंने बताया कि शेल्टर राम में मौजूद कर्मचारियों को व्यवस्थाओं को और बेहतर बनाने के लिए दिशा निर्देश दिए गए हैं। इस दौरान तुलसीदास और प्रवेंद्र कुमार के अलावा नगर पालिका परिषद के हसन बाबू सहित अन्य कर्मचारी गण मौजूद रहे।

पूरन रामप्रकाश दीक्षित महाविद्यालय में एमए तृतीय सेमिस्टर के तीन और लोदीपुर के अभिनवप्रज्ञा महाविद्यालय के बीएससी रसायन विज्ञान के सात छात्रों ने छोड़ी परीक्षा

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

हमीरपुर :- बुंदेलखंड विश्वविद्यालय की सेमेस्टर परीक्षाओं में वृहस्पतिवार से बीए ,बीएससी व एमए प्रथम सेमेस्टर की परीक्षाए शुरू हुई।विश्विद्यालय से आई उड़नदस्ता टीम ने जिले के कई महाविद्यालयो में परीक्षाओं का औचक निरीक्षण कर सीसी टीवी कैमरे भी देखे। मुस्करा विकास खंड क्षेत्र के गांव गहरौली में स्वर्गीय पूरन रामप्रकाश दीक्षित महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ लोकेंद्र नाथ पांडेय ने बताया कि गुरुवार की सुबह मीटिंग में बीए पांचवे सेमेस्टर विषय अंग्रेजी ,एमए तृतीय सेमेस्टर विषय हिंदी व राजनीति विज्ञान की परीक्षा 25 छात्राओं को देनी थी जिनमें 3 अनुपस्थिति रहीं।दोपहर पाली में बीए तृतीय सेमेस्टर माइनर अनिवार्य विषय की 98 छात्राए परीक्षा में शामिल रहीं।वहीं शाम पाली में 27 ने परीक्षा दी।कस्बा बिवांर के हीरानन्द पीजी कालेज बिवांर के प्राचार्य डॉ अभिनन्दन सिंह ने बताया कि गुरुवार की सुबह पाली में बीए पंचम सेमेस्टर विषय अंग्रेजी, एमए प्रथम सेमेस्टर विषय इतिहास,गृहविज्ञान, शिक्षा शास्त्र की परीक्षा के लिए 47 छात्राये पंजीकृत थी जिसमे 1 अनुपस्थिति रही,दोपहर में आयोजित हुई बीए तृतीय सेमेस्टर माइनर विषय की परीक्षा में 159 परीक्षार्थी शामिल रहे।शाम पाली में शुरू हुई बीएससी प्रथम सेमेस्टर विषय रसायन विज्ञान,बीए प्रथम सेमेस्टर विषय इतिहास व एमए तृतीय सेमेस्टर विषय गृहविज्ञान की 55 छात्राओं को परीक्षा देनी थी जिसमे 1 ने अपनी परीक्षा छोड़ दी।लोदीपुर निवादा में संचालित अभिनव प्रज्ञा महाविद्यालय के केंद्राध्यक्ष डॉ शिवमंगल तिवारी ने बताया कि गुरुवार की सुबह पाली में आयोजित हुई परीक्षा में 79 ने अपनी परीक्षा दी।वही दोपहर पाली में बीए तृतीय सेमेस्टर विषय अनिवार्य माइनर विषय की परीक्षा 205 छात्र/छात्राओ को देनी थी जिसमे 3 ने परीक्षा छोड़ दी।वही शाम पाली में एमए तृतीय सेमेस्टर विषय गृहविज्ञान विषय एवम बीए विषय इतिहास व बीएससी विषय रसायन विज्ञान प्रथम सेमेस्टर की 167 छात्र/छात्राओ को परीक्षा देनी जिसमे 7 ने अपनी परीक्षा छोड़ दी।

भाकियू नेता ने डाक्टर पर लगाया अभद्रता का आरोप

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

हमीरपुर :-सुमेरपुर कस्बा के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के ओपीडी में मौजूद डॉक्टर ने भाकियू के प्रांतीय सचिव को बगैर उपचार किये डपटकर भगा दिया। भाकियू नेता ने मामले की शिकायत मुख्य चिकित्साधिकारी से करते हुए डॉक्टर को हटाने की मांग की है। भाकियू नेता सुरेश शुक्ला ने सीएमओ को दी गई शिकायत में आरोप लगाया है कि बुधवार को वह कस्बे के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में उपचार कराने गए थे ओपीडी में मौजूद चिकित्सक ने बगैर उपचार किये अभद्रता करते हुए अस्पताल से भगा दिया।बताया कि उसके हांथ पर त्वचा रोग है , शर्ट की बांह खोलकर दिखाते हुए डॉक्टर भड़क उठा और उससे अभद्रता करते हुए कहने लगा कि वह उसे छू नहीं सकता ,उसने हाँथ कैसे खोल दिया।किसान नेता का आरोप है कि उनका पूर्व में यहां उपचार होता रहा है और दवाई भी उपलब्ध होती रही हैं इसके बाद उनका उपचार नहीं किया गया और उनके साथ डॉक्टर ने अभद्र व्यवहार किया। पीडित किसान नेता ने सीएमओ से डॉक्टर को प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र से हटाने की मांग की है।

दो बाईकों की सीधी टक्कर, महिलाओ सहित छः गंभीर

हमीरपुर :- परीक्षा देकर अपने घर लौट रहे बाईक सवार युवकों की एक वैवाहिक कार्यक्रम से लौट रहे बाईक सवारों से टक्कर हो गई जिसमे महिलाओ सहित आधा दर्जन लोग गंभीर रूप से घायल हो गए जिन्हें राहगीरों की मदद से एम्बुलेंस के माध्यम से इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ केंद्र मौदहा लाया गया जहां से सभी को गंभीर चौंटों के चलते प्राथमिक उपचार के बाद सदर अस्पताल के लिए रेफर कर दिया गया है। सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार मौदहा कस्बा के मोहल्ला फत्तेपुर निवासी दीपक (22)पुत्र बच्चीलाल, लक्ष्मी (20)पुत्री अमरनाथ, रजनी (40)पत्नी अमरनाथ बाईक से एक वैवाहिक कार्यक्रम से लौट रहे थे जबकि दूसरी ओर कुनेहटा निवासी अर्जुन (18)पुत्र राजेंद्र और सुरौली निवासी संजीव (19)पुत्र राजू यादव और योगेश बिगहना स्थित महाविद्यालय से सेमेस्टर परीक्षा देकर लौट रहे थे तभी बिगहना और कुनेहटा के बीच दोनों बाईकों की आमने सामने जोरदार टक्कर हो गई जिसमे सभी घायल हो गए। राहगीरों की सूचना पर पहुंची एम्बुलेंस के माध्यम से सभी घायलों को इलाज के लिए कस्बे के सरकारी अस्पताल ले जाया गया जहां से सभी घायलों को गंभीर चौंटों के चलते प्राथमिक उपचार के बाद सदर अस्पताल के लिए रेफर कर दिया गया है। दोनों बाइक सवारों ने हेलमेट नहीं लगाया था जबकि सभी की हालत स्थिर बताई जा रही है।

तेज रफ्तार कारें आमने-सामने भिड़ीं, चार घायल, तीन कानपुर रिफर

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

हमीरपुर :- हमीरपुर-राठ स्टेट हाईवे 42 पर बृहस्पतिवार दोपहर लगभग बारह बजे हुई भीषण सड़क दुर्घटना में दो कारें आमने-सामने टकरा गई।दोनों कारों में दो-दो लोग सवार थे , दुर्घटना में चारों कार सवार गम्भीर रूप से घायल हो गए।बिवांर थाना से लगभग एक किलोमीटर हुई इस सडक दुर्घटना की सूचना पुलिस को तुरंत मिल गई ,जिसपर पुलिस ने दुर्घटना स्थल पर पहुंचकर चारों घायलों को राहगीरों की मदद से कारों से निकाला और दो को थाना की जीप व अन्य दो को 112 नम्बर की गाड़ी द्वारा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र छानी भेजा।छानी अस्पताल से प्राथमिक उपचार कर सभी को जिला अस्पताल रिफर कर दिया गया।घायलों में कानपुर निवासी सत्यम गुप्ता पुत्र राजेश गुप्ता की हालत ज्यादा खराब थी जिसे जिला अस्पताल से तुरंत कानपुर रिफर कर दिया गया, जबकि अन्य दो पुनीत अवस्थी(38) पुत्र अश्विनी अवस्थी निवासी रमेडी, मनोज कुमार यादव(48)को भी गम्भीर हालत के चलते कानपुर रिफर किया गया ,रविन्द्र(38)पुत्र परशुराम का जिला अस्पताल में इलाज चल रहा है। इंचार्ज थाना प्रभारी अंकित बैसला ने जानकारी दी कि घायलों द्वारा बताया गया ,मनोज कुमार यादव ,अपर जिला सहकारी समिति तहसील राठ में तैनात है जो हमीरपुर मीटिंग में जा रहे थे और उनके साथ रविन्द्र कुमार जो सहकारी समिति बसेला राठ में तैनात है स्विफ्ट कार में बैठे थे।दूसरी कार टाटा पंच में पुनीत अवस्थी और सत्यम गुप्ता सवार थे जो रात जा रहे थे।राहगीरों ने बताया कि टक्कर इतनी जोरदार थी कि टाटा पंच रोड किनारे खाई में जा गिरी।इंचार्ज थाना प्रभारी ने बताया कि दोनों कारों के एयरबैग खुल गए थे अन्यथा किसी की मौत भी ही सकती थी।पुलिस ने दोनों कारों को जेसीबी मशीन से खिंचवाकर थाना परिसर में खड़ा करवाया।

मिक्सर मशीन में गिरने से मजदूर की मौत, पुलिस ने निकाले शव के टुकड़े

●परिजनों ने साईं कंस्ट्रक्शन कम्पनी पर लगाए सुरक्षा इंतजामों की अनदेखी के आरोप

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

हमीरपुर :- सदर कोतवाली क्षेत्र के कुछेछा में स्थित मिक्सर मशीन में सीमेंट डालते समय एक मजदूर उसमे गिरकर फंस गया। जिससे उसकी मौत हो गई। घटना की जानकारी मिलने पर प्लांट पहुंचे परिजनों ने जमकर हंगामा काटा। घटना की सूचना मिलने पर भारी पुलिस बल तैनात किया गया।घण्टों तक परिजनों ने शव नहीं उठने दिया है।वहीं प्लांट के कर्मचारी मौके से फरार हो गए हैं। सदर कोतवाली के कुछेछा में संचालित साई इंफ्रा कंस्ट्रक्शन में बीते सात सालों से कुछेछा निवासी 40 वर्षीय बब्बू निषाद पुत्र बैजनाथ मजदूरी करके अपने परिवार का भरण पोषण करता था। गुरुवार की सुबह वह रोजाना की तरह सुबह दस बजे प्लांट पहुंचा। जहां उसने काम करना शुरू किया।

बब्बू ने जैसे ही मिक्सर मसीन में सीमेंट की बोरी डाली। वैसे ही वह भी मशीन के अंदर चला गया। इस दौरान वह मशीन में बुरी तरह से फंस गया। जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई।परिजनों ने सुरक्षा के पर्याप्त इंतजाम न होने का आरोप लगाते हुए हंगामा शुरू कर दिया।घटना सुबह लगभग ग्यारह बजे की बताई जा रही है।इस दर्दनाक घटना में मजदूर के मिक्सर मशीन में फंसने से टुकड़े-टुकड़े हो गए। मामले की गंभीरता देखते हुए सीओ सदर राजेश कमल भी घटना स्थल ओर पहुंच गए एयर बहैत समझाने व मुआवजा दिलाने का आश्वासन देने के बाद परिजनों ने ,पुलिस द्वारा मशीन से निकाले गए शव के टुकड़ों को पोस्टमार्टम के लिए भेजने दिया। घटना से मृतक की पत्नी शोभा समेत बच्चे रो-रोकर बेहाल हैं। घटना के बाद प्लांट के सभी कर्मचारी मौके से फरार हो गए हैं।हमीरपुर चेयरमैन कुलदीप निषाद ने भी परिजनों को मुआवजा दिलाने जा आश्वासन दिलाया।

श्रीभूमि जिले के बास्कालटीला में एनजीओ द्वारा दो सौ से अधिक लोगों के लिए मुफ्त नेत्र जांच शिविर का आयोजन

●किसान एनजीओ के इस जनकल्याणकारी प्रयास की इलाके के लोगों ने सराहना की

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

श्रीभूमि- श्रीभूमि जिले के दुल्लभछड़ा खंड विकास के अंतर्गत किसान एनजीओ के प्रयास से दरगारबंद जीपी के उत्तर बास्कालटीला स्कूल के प्रांगण में गत 7 दिसंबर को मुफ्त आंखों की जाँच शिविर का आयोजन किया गया। जानकारी के अनुसार, इस दिन आयोजित इस शिविर में विभिन्न गाँवों के दो सौ से अधिक लोगों ने आंखों की जांच का लाभ लिया। सुबह से ही शिविर स्थल पर लोगों की भीड़ जमा रही। दुल्लभछड़ा के समाजसेवी दीपन सिन्हा ने किसान एनजीओ के इस प्रयास की प्रशंसा करते हुए भविष्य में इस तरह के समाज कल्याण कार्यों में सहयोग का आश्वासन दिया।

किसान एनजीओ के अध्यक्ष असीम सिन्हा ने शिविर को सफल बनाने में सहयोग करने के लिए दीपन सिन्हा और दरग़ारबंद जीपी की सभानेत्री माला सिन्हा का हार्दिक धन्यवाद और आभार व्यक्त किया। उन्होंने आगे कहा कि आज के इस शिविर के अनुभव से हमें भविष्य में और भी जनकल्याणकारी कार्यों के लिए प्रेरणा मिलेगी। इस दिन के शिविर को सुचारू रूप से संपन्न करने में मदद करने के लिए ईयरस्किल्स आई टेस्टिंग मोबाइल यूनिट के कर्मचारियों और किसान एनजीओ के सभी सदस्यों की तरफ से धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

हर्षोल्लास के साथ मनाया गया प्रांतीय रक्षक दल का 77वां स्थापना दिवस

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

हमीरपुर :- सुमेरपुर विकासखण्ड के टिकरौली गांव के मिनी स्टेडियम में गुरुवार को प्रांतीय रक्षक दल (पीआरडी) का 77वां स्थापना दिवस बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम में आयोजित आकर्षक परेड में विभिन्न ब्लॉकों की टोलियों ने अनुशासन और दक्षता का प्रभावशाली प्रदर्शन किया। जिला युवा कल्याण एवं प्रांतीय रक्षक दल अधिकारी नेहा सोनी ने उत्कृष्ट सेवाओं के लिए जवानों को सम्मानित किया। उन्होंने बताया कि पीआरडी जवान सुरक्षा, आपदा प्रबंधन, यातायात नियंत्रण एवं ग्रामीण क्षेत्रों में प्रशासनिक सहयोग जैसे महत्वपूर्ण कार्यों में अपनी भूमिका निभाते हैं। उनकी सतर्कता, अनुशासन और तत्परता इस दल की पहचान है। उन्होंने स्थापना दिवस पर उनके योगदान को सराहा। परेड प्रतियोगिता में भीषम सिंह ब्लॉक सरीला की टोली प्रथम स्थान पर रही, जबकि टोली नंबर दो को सर्वश्रेष्ठ टोली घोषित किया गया। टोली के जवान माताप्रसाद, अजय, आशीष, शैलेंद्र सहित 14 जवानों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। टोली नंबर दो के कमांडर अनिरुद्ध को सर्वश्रेष्ठ कमांडर चुना गया। कार्यक्रम में प्रभारी अधिकारी नेहा सोनी ने कुरारा ब्लॉक के पीआरडी जवान राकेश को उनके घर में हुए अग्निकांड से हुई क्षति पर 5100 रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की। उनके इस मानवीय कदम की सराहना की गयी। नेहा सोनी ने कहा पीआरडी जवान सरकार और जनता के बीच सेतु का कार्य करते हैं। चाहे सुरक्षा व्यवस्था हो, आपदा प्रबंधन हो या जनसेवा—पीआरडी दल हर परिस्थिति में तत्परता और निष्ठा से प्रशासन का सहयोग करता है। जवानों का अनुशासन और समर्पण ही इस दल की सबसे बड़ी शक्ति है।

केंद्रीय विद्यालय में हुआ वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

हमीरपुर :- सुमेरपुर कस्बा स्थित केन्द्रीय विद्यालय में तृतीय वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का शुभारंभ विद्यालय के प्राचार्य राजमंगल यादव ने दीप प्रज्वलित करके किया। कार्यक्रम प्रभारी पीबी रावत ने विद्यार्थियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया। जिसमें ज़िग जैग रेस, फ्रॉग रेस, रिले रेस, थ्रो बॉल जैसी विभिन्न प्रतियोगिताएं शामिल की गयीं।प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागियों को प्राचार्य द्वारा पुरस्कृत करते हुये खेलों की महत्ता और खेलों का दैनिक जीवन में उपयोगिता और निरोगी काया के प्रति आवश्यकता की जानकारी दी गई। प्राचार्य राजमंगल यादव ने विद्यालय के सभी विद्यार्थियों द्वारा प्रतियोगिता में प्रतिभाग करने पर बधाई दी।